₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मार्च 2018



- ख़राबियां जो दिखायी नहीं देतीं
  –मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
- इस्लाम का शांति संदेश
  –प्रो॰ अब्दुल अज़ीम जांबाज़
- इस्लाम के अध्ययन के स्रोत
  –ज़हीर ललितपुरी
- स्वच्छता एवं पवित्रता
  –संपादन प्रभाग



BISMILLA FISHERIES

Near Zuari Acid Tank, Vasco-da-Gama, GOA

Ph. : 0832-Off. : 518634/513240/518786, Res. : 514587, Mobile : 982212391

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 9 मार्च 2018

"तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है ? (कुरआन)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार–प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

जंग

ज़िन्दगी दुश्वार ख़ैर ओ आफ़ियत ख़तरे में है
जंग का माहौल है इन्सानियत ख़तरे में है
दहशतें बारूद लेकर घूमती हैं हर तरफ़
नफ़रतें इन्सानियत को बांटती हैं हर तरफ़
लोग अपने मुल्क को हैं बांटने को मुंतज़िर
असलहे उम्मीद के पर काटने को मुंतज़िर
हर कोई एक दूसरे पर क़हर बरपाने लगा
फिर क़बीलाई ज़माना लौट कर आने लगा
सरहदें यूं आज अपनी हैसियत खोने लगीं
बस्तियां मायूस होकर ग़मज़दा होने लगीं
कुछ इलाक़े ही नहीं सारा जगत ख़तरे में है...
जंग के माहौल ने ग़मगीन सबको कर दिया
सबकी आंखों को लहू के आंसुओं से भर दिया
जंग के शोले भड़क कर आसमां छूने लगे
इस क़दर ऊंचे उठे के कहकशां छूने लगे
कहकशाएं भी ज़मीं पर आग बरसाने लगीं
रोशनी के नाम पर तारीकियां छाने लगीं
अम्न के शैदाई ही दुश्मन बने हैं जान के
ख़ून से लथपथ हुए एहसास हर इन्सान के
क्या बड़े छोटे यहां मासूमियत ख़तरे में है...
जंग बरहक़ है अगर वो हो बुराई के ख़िलाफ़
बदसलूकी बेईमानी बेहयाई के ख़िलाफ़
जंग लड़ते हैं मगर इन्सान दौलत के लिए
और कुछ इन्सान लड़ते हैं हुकूमत के लिए
जंग के ज़रिए सियासत कर रहे हैं लोग कुछ
इसलिए उनसे बग़ावत कर रहे हैं लोग कुछ
जंग का अंजाम होता है कभी अच्छा नहीं
आपने शायद कभी इस तौर पर सोचा नहीं
बादशाहत सल्तनत जम्हूरियत ख़तरे में हैं...

● **ज़हीर ललितपुरी**



कहां क्या है ?

जंग	–ज़हीर ललितपुरी	3
कुरआन ज्योति		5
शुभ सूचना और बधाई (हदीस मंजरी)		6
अच्छे दिनों की आस में गुज़रते साल दर साल ! (संपादकीय)		7
गोशालाएं खोलकर गो-संरक्षण करें (आपके पत्र)		9
उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰)	–माइल ख़ैराबादी	11
ख़राबियां जो दिखायी नहीं देतीं	–मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	15
सहनशीलता : एक विशिष्ट मानवीय गुण	–कौसर लईक़	17
'माधोराय का धरहरा'	–डॉ॰ रमेश प्रसाद गर्ग	21
मानवता के नाम इस्लाम का शांति संदेश (विशेष आयोजन)	–प्रो॰ अब्दुल अज़ीम जांबाज़	26-27
इस्लाम में जानवरों के अधिकार	–प्रो॰ अब्दुल अज़ीम जांबाज़	29
तलाक़ और नारी स्वतंत्रता (सामयिक)	–संपादन प्रभाग	33
टोबा टेकसिंह (कहानी)	–सआदत हसन मंटो	35
स्वच्छता एवं पवित्रता	–संपादन प्रभाग	39
इस्लाम धर्म के अध्ययन के वास्तविक स्रोत (आस्था)	–ज़हीर ललितपुरी	43
आदर्श समाज के निर्माण में परलोक की धारणा का योगदान (पुस्तक समीक्षा)		45
चिंता भगाइए (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ प्रदीप प्रह्लाद	47
भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियां-1 (बालवीथी)		49

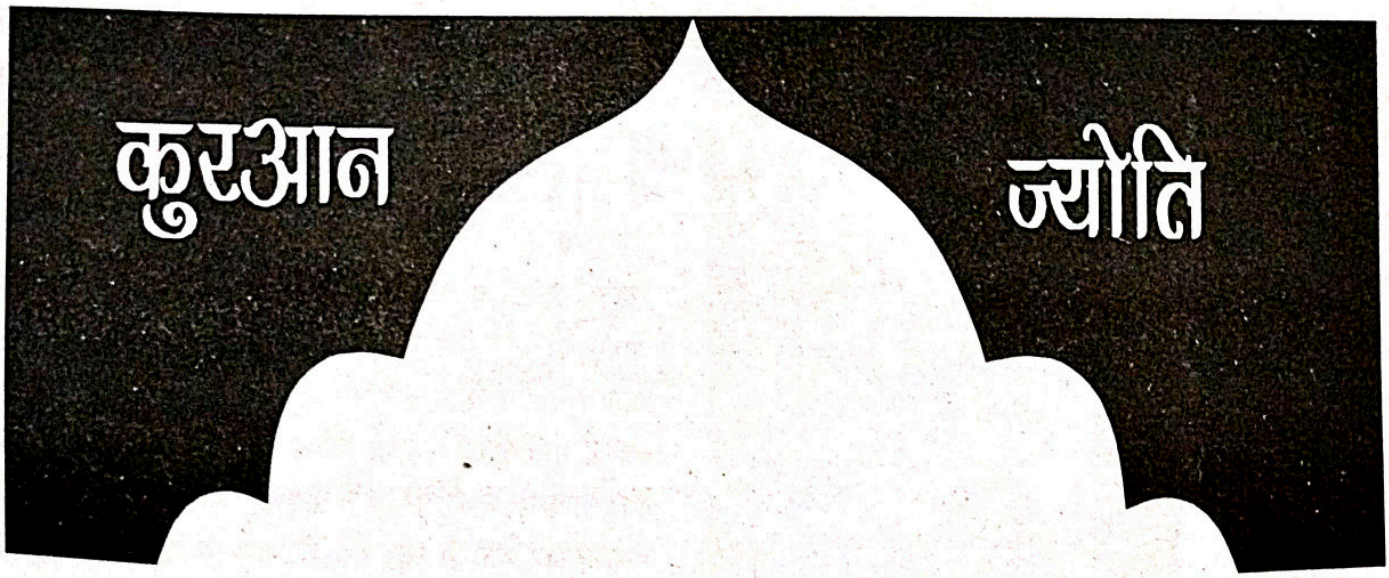

(54) अगर हर उस आदमी के पास, जिसने ज़ुल्म किया है, धरती की दौलत भी हो तो उस अज़ाब से बचने के लिए वह उसे फ़िदया (अर्थदंड) में देने पर तैयार हो जाएगा। जब ये लोग उस अज़ाब को देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएंगे[59], परन्तु उनके बीच भरपूर न्याय के साथ निर्णय किया जाएगा, कोई अत्याचार उन पर न होगा। (55) सुनो ! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, अल्लाह का है। सुन रखो ! अल्लाह का वादा सच्चा है, परन्तु अधिकतर मनुष्य जानते नहीं हैं। (56) वही जीवन प्रदान करता है और वही मौत देता है और उसी की ओर तुम सबको पलटना है। (57) लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है। यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों का उपचार है और जो उसे अपना लें, उनके लिए मार्गदर्शन और रहमत है। (58) ऐ नबी ! कहो कि 'यह अल्लाह की कृपा और उसकी मेहरबानी है कि यह चीज़ उसने भेजी, इस पर तो लोगों को ख़ुशी मनानी चाहिए, यह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन्हें लोग समेट रहे हैं।'' **–क़ुरआन, 10 : 54-58**

---

59. जिस चीज़ को उम्र भर झुठलाते रहे, जिसे झूठ समझकर सारी ज़िन्दगी ग़लत कामों में खपा गये और जिसकी ख़बर देने वाले पैग़म्बरों पर तरह-तरह के आरोप लगाते रहे, वही चीज़ जब उनकी आशाओं के बिल्कुल विपरीत अचानक सामने आ खड़ी होगी तो उनके पांव तले से ज़मीन निकल जाएगी। उनकी अन्तरात्मा उन्हें स्वयं बता देगी कि जब वास्तविकता यह थी तो जो कुछ वे दुनिया में करके आये हैं, उसका अंजाम अब क्या होना है। अपना इलाज ख़ुद नहीं होगा। ज़ुबानें बन्द होंगी और लज्जा और संताप से हृदय अन्दर ही अन्दर बैठे जा रहे होंगे। जिस आदमी ने अटकल-गुमान के सौदे पर अपनी सारी पूंजी लगा दी हो और किसी हितैषी की बात न मानकर दी हो, वह दीवालिया निकलने के बाद स्वयं अपने सिवा और किसकी शिकायत कर सकता है ?

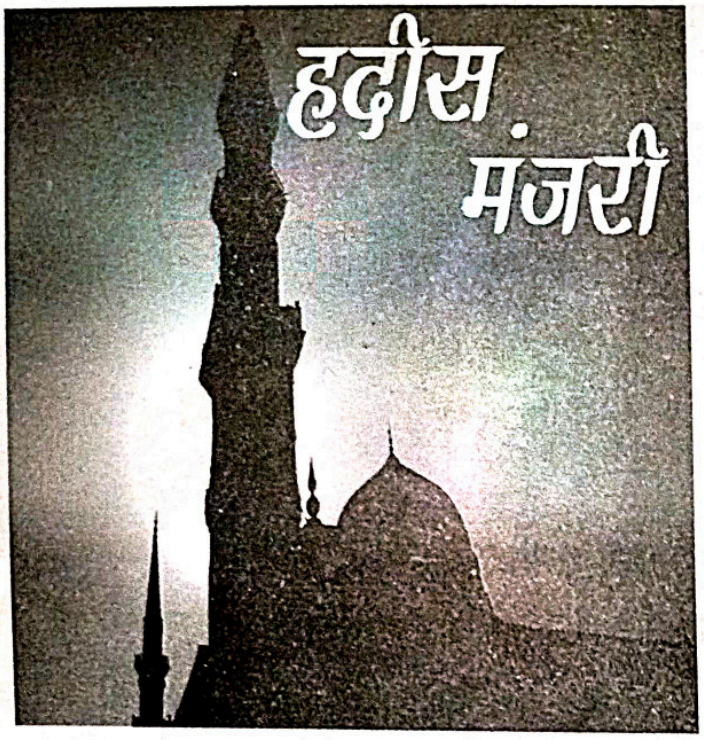

शुभ-सूचना देना और बधाई देना वांछनीय है

● हज़रत इब्न शुमासह से रिवायत है । वे कहते हैं कि हम हज़रत अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) के पास मौजूद थे । उस समय वे प्राण त्यागने की अवस्था में थे । वे देर तक रोते रहे और उन्होंने अपना मुंह दीवार की ओर कर लिया । उनके बेटे ने (सांत्वना देते हुए) कहा : पिता जी, क्या अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने आपको ऐसी और ऐसी खुशख़बरी नहीं दी थी ? उन्होंने अपना मुख सामने किया और कहा : जिस चीज़ को हम सर्वश्रेष्ठ समझते हैं वह यह गवाही है कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं । मैं तीन हालतों से गुज़रा हूं । मैंने आप (सल्ल॰) को इस हाल में भी देखा है कि मुझसे बढ़कर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से द्वेष और दुश्मनी रखने वाला कोई और न था । और मुझे इस बात से बढ़कर कोई और चीज़ प्रिय न थी जितनी यह बात कि यदि मुझे अपने पर वश और ज़ोर प्राप्त हो तो मैं आपको क़त्ल कर दूं । यदि मैं इस हाल में मर जाता, तो निश्चय ही मैं नारकी होता । फिर जब अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम को स्थान दिया, तो मैं नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा : आप अपना दायां हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आपसे 'बैअत, करूं (अर्थात आपके आज्ञापालन का वचन दूं) आपने अपना दायां हाथ बढ़ाया, तो मैंने अपना हाथ समेट लिया । इस पर आपने कहा : "ऐ अम्र, तुम्हें क्या हो गया है ?" मैंने कहा : मैं एक शर्त रखना चाहता हूं । आपने कहा : "तुम क्या शर्त रखना चाहते हो ?" मैंने कहा : यह कि मुझे क्षमा कर दिया जाए । आपने कहा : "क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम पिछले गुनाहों को समाप्त कर देता है और यह कि हिजरत (अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ना) भी पिछले गुनाहों को समाप्त कर देती है और यह कि हज से भी पिछले गुनाह समाप्त हो जाते हैं ?" उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से बढ़कर मुझे कोई प्रिय न था और न मेरी दृष्टि में आपसे बढ़कर कोई महान था । आपकी महानता और प्रताप के कारण मैं आपकी तरफ़ भर निगाह देख नहीं सकता था । और यदि मुझसे आपके रूप-रंग के बारे में पूछा जाए तो मुझ में उसके बयान करने का सामर्थ्य नहीं क्योंकि मैंने आपको भर निगाह देखा ही नहीं । यदि मेरी इस हाल में मृत्यु हो जाती, तो मुझे आशा है कि जन्नत वालों में सम्मिलित होता । इसके पश्चात मुझे ज़िम्मेदार और हाकिम बनाया गया । मैं नहीं जानता कि इस सिलसिले में मेरा क्या हाल है ? तो जब मेरी मृत्यु हो जाए तो न मेरे (शव के) साथ न कोई रोने वाली जाए और न आग । और जब तुम मुझे दफ़्न करने लगो तो मुझ पर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डालना । फिर मेरी क़ब्र के गिर्द इतनी देर ठहरना जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह करके उसका मांस वितरित कर दिया जाता है । ताकि तुम्हारी उपस्थिति से मेरी घबराहट दूर रहे और परिस्थिति मनोनुकूल हो और मैं देखूं कि अपने रब के भेजे हुए दूतों (फ़रिश्तों) को क्या जवाब देता हूं ।

—मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

अच्छे दिनों की आस में गुज़रते साल दर साल !

क्या कोई बता सकता है कि अच्छे दिन आने का जो सब्ज़बाग़ भाजपा ने दिखाया था, वह ज़मीनी हक़ीक़त में कब परिवर्तित होगा ? सत्ताधारी दल के लोग और विभिन्न स्तरों के भाजपाई पहले यह कहते नहीं थकते थे कि 30 दिनों में ही ये अच्छे दिन नहीं आ सकते, इनके लिए तीन-छह महीने का वक़्त तो दीजिए । अब तो केंद्र सरकार गठन के 48 महीने पूरे होने वाले हैं, मगर पहले से अधिक मुश्किलों और कठिनाई भरे दिनों के सिवा सरकार ने आख़िर दिया क्या है ? देश में भूख-बेरोज़गारी के आलम में जातीयता और सांप्रदायिकता के ज़हरीले बादल छाये हुए हैं । देश और समाज की मौलिक समस्याओं की ओर से ध्यान हटाने के लिए महत्वहीन चीज़ों को प्राथमिकता दी जा रही है । ऐसे भाषण दिए जा रहे हैं, जो यथार्थहीन होने के साथ उपहासात्मक भी हैं ! प्रतिवर्ष एक करोड़ नौकरियां देने के वादे के नाम पर पकौड़ी तलने को रोज़गार बताकर अपना पिंड छुड़ाया जा रहा है ! इस पर तंज कसते हुए पूर्व वित्त मंत्री पी॰ चिदंबरम ने कहा कि फिर तो भीख मांगना भी रोज़गार होगा ! क्या ऐसे ही भाषणों से आमजन का पेट भरेगा ? पेट्रोल, डीज़ल के दाम फिर बेतहाशा बढ़ रहे हैं । पहले इनके जो दाम घटे थे, उसे सरकार की उपलब्धि बताकर जनता को गुमराह करने की कोशिश भी की गयी थी । जबकि सच्चाई यह थी कि ये दाम तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल के दाम घटने से ही संभव हो पाए थे, लेकिन महंगाई की मार से कराहती जनता को जितनी राहत मिलनी चाहिए, उतनी राहत किसी भी महीने नहीं मिल पाई ! मतलब यह तेल के दाम जितने घटे हमारे देश में उतने कम नहीं हुए ! तेल कंपनियों को जान-बूझकर मालामाल किया गया और आम जनता को कंगाल ! अब जी॰एस॰टी॰ से इन्हें अलग रखकर पेट्रोल-डीज़ल के दामों को पंख लगाया जा रहा है । मतदाताओं ने बढ़ती महंगाई और सब्सीडी पाने के लिए आधार जैसे जंजाल में जनता को फांसने की वजह से कांग्रेस को सत्ता से हटाया था ।

भाजपा ने इन समस्याओं से निजात दिलाने का वादा भी किया था । सत्ता में आने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, वित्त मंत्री अरुण जेटली, तत्कालीन वाणिज्य मंत्री (अब रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण आदि ने इस ओर प्राथमिकता के साथ क़दम उठाने के बयान दिये थे, मगर अच्छे दिन न आने, न ही आ सके । फिर इन मोर्चों पर नाकामी को देखते हुए केंद्र सरकार ने कांग्रेस की तर्ज़ पर पुराना राग अलापना शुरू कर दिया है । प्रधानमंत्री महोदय ने यह कहना शुरू कर दिया है कि जनता के दीर्घकालीन कल्याण के लिए थोड़ी कड़वी घूंट तो पीनी ही होगी । दूसरी ओर यह भी कहा जा रहा है कि मोदी सरकार की कोशिशों से देश तरक़्क़ी की ओर जा रहा है । नोट बंदी और जी॰एस॰टी॰ के कोई ख़ास फ़ायदे अब तक सामने नहीं आ सके हैं । वस्तुओं की लागत में वृद्धि के कारण महंगाई शून्य स्तर पर तो नहीं लाई जा सकती, किन्तु इसे

न्यूनतम स्तर पर ज़रूर रखा जा सकता है, लेकिन यह संभव नहीं हो पा रहा है । देश की विकास दर घट गयी है । आज हालत यह है कि खाद्य पदार्थ ख़ासकर फल और सब्ज़ियों के दाम बेतहाशा बढ़ रहे हैं । यहां तक कि वे मध्यम वर्ग के लोगों की पहुंच से भी बाहर हो रहे हैं । सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि सब्ज़ी के दाम बेतहाशा बढ़ गये हैं । किसानों को उससे कोई लाभ नहीं मिल रहा है । उधर उपभोक्ता पिस रहे हैं । जमाख़ोर और बिचौलिये चांदी काट रहे हैं और सरकार चुप्पी साधे बैठी है ! कुछ अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि सकल घरेलू उत्पाद (जी॰डी॰पी॰) में वृद्धि आवश्यक है । अतः आम आदमी के काम में आने वाली रोज़मर्रा की वस्तुओं के उत्पादन में तेज़ी से वृद्धि ज़रूरी है । इस विचार से बहुत सहमत नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि जनहित पहले हैं और हमारा देश लोकतांत्रिक देश है, जो 'जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा' के सिद्धांत पर चलता है । इसलिए ज़रूरी है कि महंगाई घटे और आम जन को राहत मिले । साथ ही जनता की समस्याओं को कम करने वाले क़दम उठाए जाएं । कांग्रेस ने आधार कार्ड को अनिवार्य ठहराकर देशवासियों के लिए जो अनावश्यक समस्याएं पैदा कीं और सत्ता से हाथ धो बैठी, अब भाजपा ने इसे लगभग सभी चीज़ों के लिए अनिवार्य कर दिया है ! इसके चलते आमजन की परेशानियां अनावश्यक रूप से बढ़ी हैं ।



गोशालाएं खोलकर गो-संरक्षण करें

'कान्ति' के नवम्बर 2017 के अंक में जमील अहमद ख़ां का गो-रक्षकों को उचित परामर्श पर लेख पढ़ा । उनका गो-भक्तों को दिया गया सुझाव अच्छा लगा । लेखक ने बीमार एवं बूढ़ी गायों को रखने के लिए गोशालाएं खोलने के लिए आर०एस०एस० से संबंधित पूंजीपतियों व उद्योगपतियों को आमंत्रित किया है । संभवत: यह सुझाव गो-भक्तों द्वारा गो-हत्या का आरोप लगाकर दूसरे समुदायों का उत्पीड़न करने पर लिखा गया है ।

जो लोग गाय के नाम पर दूसरे समुदायों का उत्पीड़न कर रहे हैं, उसके लिए हमें उनकी मानसिकता पर विचार करना होगा । वास्तव में ये कुछ गिनती के लोग हैं, जिन्हें आर०एस०एस० ने केवल इसलिए छोड़ रखा है कि वे गाय के नाम पर झूठे आरोप लगाकर विशेष समुदायों को प्रताड़ित करें । यह बात सभी जानते हैं कि जो गाय ले जायी जा रही है वे वध के लिए नहीं होती बल्कि व्यापार के लिए होती है । ये बात बी०जे०पी० व आर०एस०एस० के लोग भी अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि पुलिस की तत्परता के कारण अब कहीं भी गाय का वध नहीं होता ।

जहां तक पूंजीपतियों/उद्योगपतियों को गोशाला खोलने के लिए आमंत्रित करने का प्रश्न है, इस बारे में यह कटु सत्य है कि इन पूंजीपतियों एवं उद्योगपतियों की निगाह केवल अपने उद्योगों को विकसित करने, अपने ख़ज़ानों को भरने और उद्योगों के संरक्षण के लिए राजनेताओं की शरण लेने पर लगी रहती है । ये राजनेता किसी भी पार्टी से संबंधित हो लेकिन हों सत्ताधारी ।

ज़मीनी सच्चाई यह है कि हर उद्योगपति अपने उद्योगों में कार्यरत कर्मचारियों का कितना शोषण करते हैं, इसका अंदाज़ा भी लगाना कठिन है । अरबों-खरबों कमाने वाले ये उद्योगपति अपने मां-बाप को तो पाल नहीं सकते, बूढ़ी गायों को क्या पालेंगे । देश में ऐसी असंख्य घटनाएं हैं जिनमें धनी संतानों ने अपने माता-पिता को घर से ही निकाल दिया है । अभी कुछ समय पहले एक दुखद घटना पढ़ने को मिली । रेमंड ग्रुप के मालिक 78 वर्षीय विजयपत सिंघानिया के पुत्र ने अपने पिता को घर से निकाल दिया । उसका पाप केवल इतना था कि उसने अपनी समस्त संपत्ति और एक हज़ार करोड़ के शेयर और रेमंड ग्रुप को अपने इकलौते बेटे के नाम कर दिया । माल हाथ में आते ही बेटे ने पिता को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया । आज पिता अपने बनाए हुए 36 माले के भवन में एक फ्लैट लेने के लिए अदालतों के चक्कर लगा रहा है ।

देश में गो-भक्तों की संख्या पहले तो थी ही लेकिन जब से बी०जे०पी० सत्ता में आयी है तब से इनकी संख्या में अनगिनत वृद्धि हुई है । लेकिन इनमें से कितने हैं जो गायों से प्रेम करते हैं । इनका गो-प्रेम केवल दूसरे समुदाय के लोगों को प्रताड़ित करने से है । सड़कों पर असंख्य गाय कूड़ा चुगती फिरती है, लेकिन किसी भी गो-भक्त में इतनी हिम्मत नहीं जो उनको गोद लेकर पालन-पोषण कर सके ।

यह भी एक कटु सत्य है कि अधिकतर गोशालाएं बूढ़ी गायों को सस्ते दामों में बेच देती है । उनमें वे डेरी वाले भी हैं जिनकी गाय दूध देने बन्द कर देती है ।

यूरोपीय देशों ने अनाथ/बीमार/बूढ़े जानवरों को पालने के लिए अनाथालय खोल रखे हैं, जबकि वे उनकी पूजा भी नहीं करते ।

हमारे देश में भी अनाथालय, पागलख़ाने, कुष्ठ आश्रम, वृद्ध आश्रम खुले हुए हैं । क्या वृद्ध गायों के गोशालाएं नहीं खोली जा सकती । अगर इस संबंध में गंभीरता से विचार किया जाए तो देश में ऐसे सैकड़ों मंदिर है जिनके पास अकूत धन व संपत्ति है । अगर हर मंदिर चाहे तो एक गोशाला अपने यहां खोल सकता है, इससे गायों के संरक्षण की समस्या हल हो सकती है ।

एस० एम० ख़ान
429 ईदगाह चौराहा, बागपत गेट,
मेरठ (उ०प्र०)

बहुपत्नीत्व

तथाकथित प्रगतिशीलों ने यह मान लिया है कि एक समय में एक से ज़्यादा पत्नियां रखना खुली बुराई और

गुमराही है । वह पैग़म्बरों और महापुरुषों की ज़िन्दगी पर नज़र डाले तो उसे मालूम हो जाएगा कि यह परम्परा आदि काल से ही चली आ रही है और आज भी प्राय: हर जाति में यह प्रथा पाई जाती है । यह उन जातियों में भी बड़ी तादाद में पाई जाती है, जिनके यहां इसे क़ानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है ।

यह लड़ाई के ज़माने में प्रचलन में आई ऐसी बात नहीं है । बात यह है कि लड़ाई के ज़माने में बहुत-सी औरतें विधवा हो गई और बहुत-से बच्चे अनाथ हो गए । उनके पालन-पोषण का संकट पैदा हो गया । ऐसी विकट परिस्थिति में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसी असहाय विधवाओं और अनाथ बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए मुसलमानों को इस बात की इज़ाजत दे दी कि वे विधवाओं से विवाह कर लें, ताकि अनाथ बच्चों का पालन-पोषण आसानी हो सके । हालांकि यह इज़ाजत आम लोगों को नहीं दी गई थी, कुछ खाते-पीते लोगों को दी गई थी ।

तथाकथित प्रगतिशील लोग बड़ी होशियारी से यह बात कहते हैं कि हम ईश्वरीय क़ानून में बदलाव नहीं चाहते, बल्कि इसमें घुस आई बुराइयों और कमियों को दूर करना चाहते हैं । वह जिस क़ानून में 'स्पष्ट परिवर्तन' का इच्छुक है, वह किसी ऐसे बिगाड़ से भरा हुआ नहीं है, जो किसी ग़लत रस्मो-रिवाज के कारण चल निकला हो, बल्कि वह एक ऐसा क़ानून है, जिसकी पीठ पर अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हदीसें हैं और चौदह सौ साल से अधिक समय से इस्लामी विद्वान और इस्लामी क़ानूनी विशेषज्ञ इसपर एकमत रहे हैं । इसमें सुधार करना या इसकी कमज़ोरियों को दूर करने की बात करने का मतलब यह है कि चिरस्थायी और शाश्वत ईश्वरीय क़ानून ही में बदलाव करने की मंशा है ।

● एक पाठक

क़ाबिले-तारीफ़ विशेषांक

इस्लामी जीवन दर्शन विशेषांक की जितनी तारीफ़ की जाए कम है । हर लेख अपने आपमें ख़ास महत्वपूर्ण लगता है । अल्लाह तआला आपकी कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और कामयाव करे, आमीन ।

ज़हीर ललितपुरी

ललितपुर, उ०प्र०

मंगल-कामनाएं

वर्ष 18 मंगलमय हो,
संकट सकल समूल नष्ट हों,
जीवन सरस और सुखमय हो,
वर्ष 18 मंगलमय हो ।

बाधा-रहित प्रगति का पथ हो,
जीवन में दुख दैन्य न आएं ।
हों निर्विघ्न कार्य सब पूरे,
उनका मन-वांछित फल पाएं ।

जीवन से दुर्भाग्य मिटे सब,
नित नव-नव सौभाग्य उदय हो ।
वर्ष 18 मंगलमय हो ।

अन्तर्मन में सद्विचार की,
सुरसरि प्रतिपल प्रवहमान हो ।
मन की मिटे कलुषता सारी,
कर्मों से जीवन महान हो ।

शक्ति-बुद्धि की वृद्धि सतत हो,
कभी न किंचित कोई भय हो ।
वर्ष 18 मंगलमय हो ।

डॉ० त्रिलोकी सिंह

हिन्दूपुर, करछना, इलाहाबाद

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०)

■ माइल ख़ैराबादी

ऐ नबी ! तू उन लोगों को जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, उन लोगों से मुहब्बत करते हुए न देखेगा, जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हों । चाहे वे उनके बाप हों या उनके बेटे हों या उनके भाई हों या उनके रिश्तेदार ।

यही वे लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान जमा दिया है और अपनी ख़ास रहमत से उनकी मदद फ़रमायी है और उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी । वे उनमें हमेशा रहेंगे । अल्लाह उनसे राज़ी हो और वे उससे राज़ी हुए । ये अल्लाह के गिरोह वाले लोग हैं । सुन लो अल्लाह के गिरोह वाले ही फ़लाह पाने वाले हैं । (सूरह : मुजादला, 22)

जब मैं सूरह मुजादला की आख़िरी आयत पढ़ता हूं जिसका तरजुमा ऊपर दिया गया है तो एक-एक करके वे तमाम बुज़ुर्ग याद आने लगते हैं जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया, और फिर अपने इस्लाम पर चट्टान की तरह जमे रहे ।

इन बुज़ुर्गों में सारे जहां के मुसलमानों की मां हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०) का नाम नामी ख़ास तौर पर नज़र आता है । हमारी इन प्यारी मां की ज़िन्दगी सूरह मुजादला की 22वीं आयत की ज़िन्दा ताबीर नज़र आती है । उम्मुल मोमिनीन ने वाक़ई इस्लाम के मुक़ाबले में न अपने इन्कारी बाप की परवाह की, न भाइयों की और न शौहर की । नीचे हम अपनी प्यारी मां के मुख़्तसर हालात बयान करते हैं । इनसे हमारी बात की पूरी ताईद होती है ।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०) का हाल बयान करने से पहले हम ज़रूरी समझते हैं कि उनके ख़ानदान का तआरुफ़ करा दें ताकि यह सब पढ़ने वाला अच्छी तरह समझ ले कि उम्मुल मोमिनीन (रज़ि०) किस क़दर ऊंचे ख़ानदान से ताल्लुक़ रखती थीं और उस ख़ानदान का अरब में क्या मक़ाम था ? और फिर जब मुसलमान हुईं

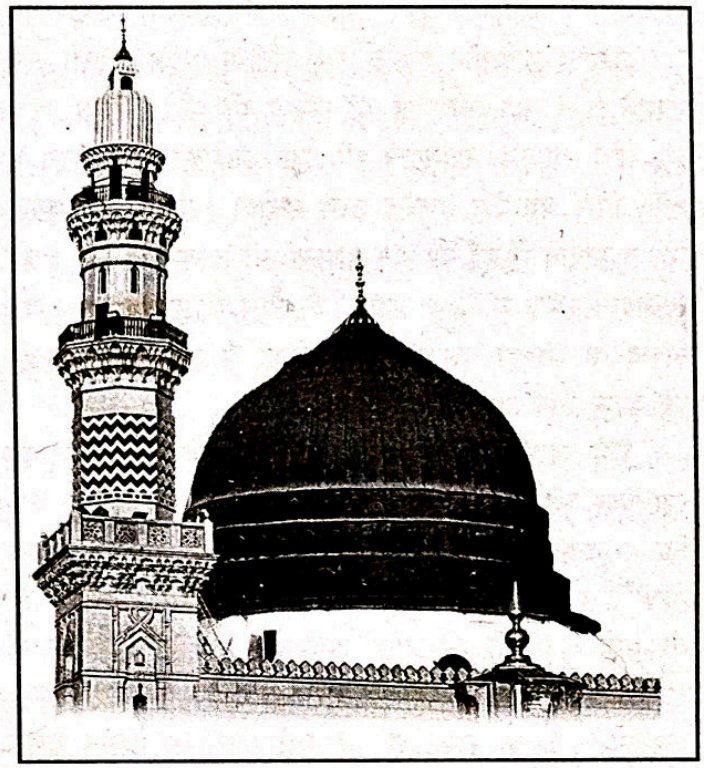

तो कैसी ग़रीबुल वतनी की ज़िन्दगी से वास्ता पड़ा ? फूलों की सेज छोड़कर कांटों से किस तरह साबित-क़दमी से अपने ईमान को लिए पहाड़ की तरह अड़ी रहीं ।

सारे अरब में क़ुरैश का ख़ानदान तमाम ख़ानदानों में इज़्ज़त वाला माना जाता था । इस ख़ानदान को अल्लाह ने बड़ी बरकत दी । आगे चलकर इसकी कई नस्लें फैलीं । इन सारी नस्लों में बनू हाशिम और बनू उमय्या सबसे ज़्यादा मशहूर हुए । बनू उमय्या में एक ऐसा आदमी गुज़रा है जिसने अपने ज़माने में सारे क़ुरैश की सरदारी हासिल कर ली थी । यह था मशहूर बहादुर हरब बिन उमय्या/अरब की मशहूर लड़ाई (जंगे फ़ुज्जार) में क़ुरैश का सेनापति इसी मशहूर बहादुर का एक बेटा था । बाप की तरह बहादुर । बाप जैसी समझ-बूझ रखने वाला । इसे भी बाप की तरह क़ुरैश की सरदारी हासिल थी । यह नामवर बेटा 'अबू सुफ़ियान'। अबू सुफ़ियान क़ुरैश के वह मशहूर सरदार हुए हैं जो अपने कुफ़्र के ज़माने में इस्लाम की राह के सबसे

बड़े पत्थर बने रहे । कुफ़्र व इस्लाम की एक मशहूर लड़ाई जो उहद के मैदान में हुई और जिसमें मुसलमानों को बहुत ज़्यादा जानी नुक़सान बर्दाश्त करना पड़ा । इस लड़ाई में क़ुरैश के अज़ीम लश्कर के सालारे आज़म अबू सुफ़ियान ही थे । इससे अबू सुफ़ियान के ऊंचे मरतबे का अंदाज़ा लगाया जा सकता है ।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) इसी ऊंचे मरतबे वाले बाप की बेटी थीं । बाप भी रईसे आज़म, दादा भी रईसे आज़म, ख़ानदान भी ऐसा जिसकी सारे अरब में धूम, फिर यह कि हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) की शादी ऐसे ख़ानदान में हुई जो बनू उमय्या की टक्कर का था । वह ख़ानदान अरब में 'बनू असद' के नाम से मशहूर था । बनू असद के मशहूर फ़रज़न्द उबैदुल्लाह से आपकी शादी हुई जो हरब बिन उमय्या का दोस्त था ।

ऐसे रईस इब्ने रईस की बेटी और इसी की टक्कर के ख़ानदान की बहू किस शान से रही होंगी । अगर हम कहें कि हर वक़्त फूलों से खेलती होंगी तो बेजा न होगा । लेकिन ठीक उस वक़्त जब रईस बिन्ते रईस तरह-तरह की नेमतों के मज़े लूट रही थीं, एक आवाज़ मक्के की गलियों में गूंजी, 'अल्लाह के सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्ल॰) उसके रसूल हैं' तो यही फूलों से खेलने वाली "उम्मे हबीबा" आवाज़ सुनने के साथ पुकारने वाले की तरफ़ बढ़ी और जब इस पुकारने वाले सैयदना मुहम्मद (सल्ल॰) को देखा तो पुकार उठीं–

"मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देती हूं कि मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और रसूल हैं ।"

और जब वापस हुईं तो अपने शौहर उबैदुल्लाह को भी इस्लाम के क़दमों में ला गिराया ।

जिस वक़्त हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) मुसलमान हुईं वह ज़माना ऐसा था जब क़ुरैशे मक्का इस्लाम का नाम सुनना गवारा न कर सकते थे । मुसलमान होने वालों पर ऐसे ज़ुल्म तोड़ रहे थे कि उनका ज़िक्र ही दिल हिला देने के लिए काफ़ी है । क़ुरैश के ग़ैरतमंदों में एक अजीब ग़ैरत यह देखी गयी कि अगर किसी बड़े ख़ानदान का कोई आदमी मुसलमान हो जाता था तो उस ख़ानदान की अपनों में नाक कट जाती थी । इस ख़ानदान के लोग अपनों में अपना वक़ार क़ायम रखने के लिए इस तरह कोशिश करते कि अपने ख़ानदान के मुसलमान हो जाने वाले को किसी न किसी तरह अपने दीन (धर्म) में वापस ले आएं और वापस लाने के लिए उन्हें अपने आदमी पर वे ज़ुल्म ढाना पड़ते जिनके देखने के लिए बड़े दिल गुर्दे क़ी ज़रूरत होती थी । कोई तो अपने ख़ानदान के मुसलमान हो जाने वाले फ़र्द को खाल में बन्द करके अरब की रेत पर डाल देता, कोई अंधेरी कोठरी में बन्द करके धुआं पहुंचाता और कोई क़ैद व बन्द और मार-धाड़ से काम लेता । मक़सद यह था कि किसी न किसी तरह मजबूर करके इस्लाम से जुदा कर दें ।

हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) भी इसी आज़माइश की भट्टी में तपायी गयीं । मगर उनका ईमान था कि कोई मज़बूत चट्टान जो आग की बड़ी से बड़ी गर्मी से भी न पिघल सकी ।

नबी (सल्ल॰) सारे ज़ुल्म देखते थे और ख़ुदा से दुआ किया करते थे कि इन ग़रीबों को कहीं पनाह लेने की जगह मिल जाए । आख़िर आप (सल्ल॰) ने मशविरा दिया कि जो मुसलमान चाहें हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जाएं । हुज़ूर के इस इशारे पर जो बहुत से लोग हब्शा की तरफ़ चल खड़े हुए, उनमें हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) और उनके शौहर उबैदुल्लाह भी थे । अगर वे चाहतीं तो ज़ुबान से ज़रा कह देतीं कि मुझे इस्लाम से कोई सरोकार नहीं, तो फिर उम्मे हबीबा (रज़ि॰) फिर वही उम्मे हबीबा होतीं जो कभी सारे ख़ानदान की प्यारी थीं । मगर नहीं, उन्होंने इस्लाम के लिए मां-बाप, ख़ानदान, वतन, आराम व सुख सब कुछ ठुकरा दिया और और ग़रीबुल वतनी की ज़िन्दगी इख़्तियार कर ली । हमने बड़े खुले दिल के साथ अपनी प्यारी मां का हाल पढ़ा है । ख़ुदा की क़सम हमें कोई कहीं ऐसा लफ़्ज़ उनकी सीरत में न मिला जिससे किसी शिकायत का पता चलता ।

हमने यह तो पढ़ा है कि हब्शा पहुंचकर जब शौहर ने इस्लाम छोड़कर ईसाई धर्म अपना लिया तो उनके चेहरे पर कोई मलाल न ज़ाहिर हुआ और आपने उस अजनबी वतन में शौहर पर भी लात मार दी और राज़ी ख़ुशी होकर वहीं ज़िन्दगी के अंधेरे दिन गुज़ारने लगीं । इस अजनबी वतन में जबकि बड़े-बड़े पुकारने लगते हैं कि–

बैठ जाता हूं जहां छांव घनी होती है,
हाये क्या चीज़ ग़रीबुल वतनी होती है ।

ग़ौर करने का मक़ाम है कि इस अजनबी वतन में एक

छांव (शौहर के रूप में) थी, वह भी न रही ।

अब सोना तप कर खरा हो चुका था । आख़िर अल्लाह की रहमत जोश में आयी और हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) को इसी दुनिया में वह एजाज़ हासिल हुआ जिससे बढ़कर कोई दूसरा एजाज़ हो ही नहीं सकता था । उम्र मुबारक तक़रीब 37 साल हो चुकी थी । यहां जनाब नबी करीम (सल्ल॰) मक्के से हिजरत फ़रमाकर मदीने तशरीफ़ ले जा चुके थे । आप (सल्ल॰) ने उम्मे हबीबा (रज़ि॰) का हाल सुना तो हज़रत अम्र बिन उम्मिया ज़मीरी (रज़ि॰) को पैग़ामे निकाह देकर हब्शा रवाना किया । वहां शाहे हब्शा मुहाजिर मुसलमानों से मिलकर इस्लाम क़बूल कर चुका था । अम्र बिन उम्मिया ज़मीरी (रज़ि॰) उसके पास पहुंचे । शाहे हब्श ने अपनी लौंडी के ज़रिये पैग़ामे निकाह हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) तक पहुंचाया । आपने क़बूल फ़रमा लिया ।

हुज़ूर (सल्ल॰) की तरफ़ से शाहे हब्श वकील बना और हज़रत उम्मे हबीबा की तरफ़ से ख़ालिद बिन सईद (रज़ि॰) वकील मुक़र्रर हुए, निकाह हो गया और फिर उम्मुल मोमिनीन बनकर हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) एक जहाज़ पर सवार हुईं और उस वक़्त मदीना पहुंची जब नबी करीम उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) अपने इस्लाम को इस दर्जा यकसू थीं कि अपने अज़ीज़ क़रीब इन्कारी तक की परवाह न करती थीं ।

कुछ दिनों के बाद इन्कारी बाप, कौन ? कुरैश का रईसे आज़म अबू सुफ़ियान किसी काम से मदीना आया । बेटी को देखने उनके घर गया । घर जाकर चाहा कि नबी करीम (सल्ल॰) के बिस्तर मुबारक पर बैठे कि हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि॰) ने बिस्तर उलट दिया । बाप सख़्त नाराज़ हुआ, बोला–"मेरे मुक़ाबले में बिछौना तुझको इतना अज़ीज़ है ?" जवाब दिया, "यह बिस्तर ख़ुदा के रसूल का है, तू शिर्क में गिरफ़्तार है मैं ख़ुदा के रसूल के बिस्तर को तेरे नापाक क़दमों से गन्दा नहीं कर सकती ।"

यह जवाब सुनकर बाप की आंखें फटी की फटी रह गयीं, था ग़ैरतदार आदमी, बोला, "तू मेरे बाद बहुत-सी ख़राबियों में गिरफ़्तार हो गयी है" यह सब सुना फिर भी उम्मुल मोमिनीन नरम न हुईं और अबू सुफ़ियान को ज़मीन पर बैठना पड़ा ।

इसके बाद उम्मुल मोमिनीन (रज़ि॰) की सीरत के तहत बहुत से वाक़ियात तारीख़ों में महफ़ूज़ हैं । इन सबका निचोड़ यह है कि हर वक़्त ख़ुदा के रसूल के इशारों पर नज़र रखती थीं और जो बात पा जाती थीं उस पर सख़्ती और पाबन्दी से अमल करती थीं । एक बार हुज़ूर (सल्ल॰) से सुना कि जो शख़्स बारह रकअत नफ़्ल रोज़ाना पढ़े उसके लिए जन्नत में ऐसा और ऐसा घर बनाया जाएगा । उसी दिन से मामूल बना लिया और उम्र भर बारह रकअत नफ़्ल की पाबन्दी हो गयी ।

63 बरस की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया । इन्तिक़ाल के वक़्त उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि॰) को बुलाया और कहा–

"इन्सान होने के तक़ाज़े और सौकन होने की वजह से मुझसे कोई ग़लती हो गयी हो तो माफ़ कर दीजिए और मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ कीजिए ।" हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने दुआ के लिए हाथ उठाये तो बोलीं, "आपने मुझे ख़ुश कर दिया, अल्लाह आपको ख़ुश करे ।"

आपकी सीरत में लिखा है कि आप बड़ी फ़ाज़िल और तमाम इन्सानी ख़ुबियों में कामिल थीं । इससे मालूम होता है कि उन्होंने हुज़ूर नबी करीम (सल्ल॰) से क्या कुछ न इस्तफ़ादा किया होगा । बहुत-सी हदीसें आपसे मरवी हैं । आपसे रिवायत करने वालों में बड़े-बड़े सहाबा और बुज़ुर्ग लोग शामिल हैं । अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी प्यारी मां के नक़्शे-क़दम पर चलें और इस पर साबित क़दम रहें ।

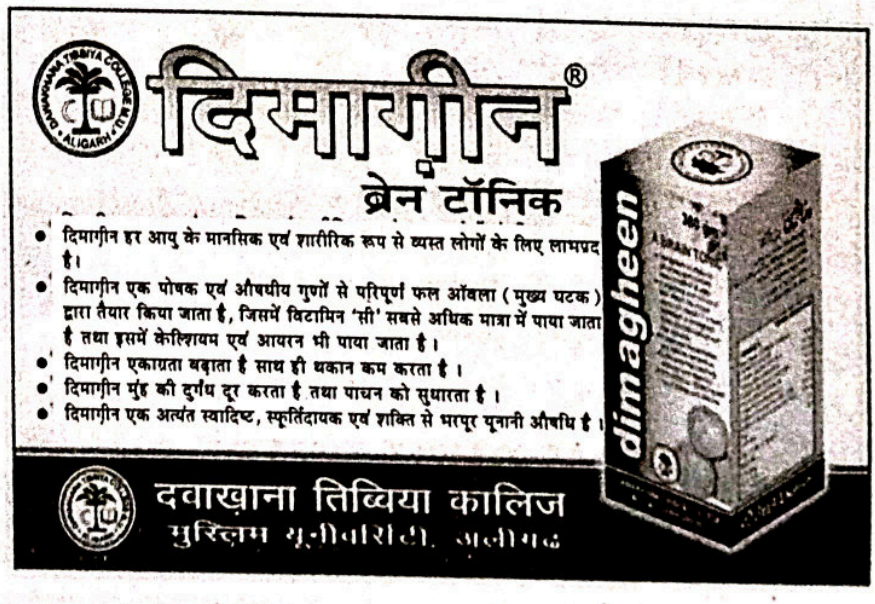

हमारी पाठ्य पुस्तकें

आसान कहानियाँ	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाकी कहानियाँ 1	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाकी कहानियाँ 2	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाकी कहानियाँ 3	अफ़ज़ल हुसैन		16.00
अख़लाकी कहानियाँ 4	अफ़ज़ल हुसैन	Set 52.00	16.00
क़ुरआन की बातें–1	सय्यद नज़र ज़ैदी		24.00
क़ुरआन की बातें–2	सय्यद नज़र ज़ैदी	Set 66.00	22.00
नेक औरतें–1	मतीन तारिक बाग़पती		24.00
नेक औरतें–2	मतीन तारिक बाग़पती	Set 36.00	12.00
नवीन सरल गणित–1	सम्पादन समिति		42.00
नवीन सरल गणित–2	सम्पादन समिति		38.00
नवीन सरल गणित–3	सम्पादन समिति		60.00
नवीन सरल गणित–4	सम्पादन समिति		75.00
नवीन सरल गणित–5	सम्पादन समिति	Set 329.00	114.00
प्यारे रसूल (सल्ल०)	अफ़ज़ल हुसैन		14.00
मालूमाती कहानियाँ	इब्ने फरीद		20.00
सामान्य ज्ञान (भाग–1)	अफ़ज़ल हुसैन		8.00
सामान्य ज्ञान (भाग–2)	अफ़ज़ल हुसैन	Set 18.00	10.00
सच्चा दीन (पहला भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		72.00
सच्चा दीन (दूसरा भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		65.00
सच्चा दीन (तीसरा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		90.00
सच्चा दीन (चौथा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		80.00
हम और हमारा माहौल–1	अफ़ज़ल हुसैन		38.00
हम और हमारा माहौल–2	सम्पादन समिति		40.00
हम और हमारा माहौल–3	सम्पादन समिति	Set 130.00	52.00
हमारी पोथी (भाग–1) अल्लाह मुहम्मद (रंगीन)	अफ़ज़ल हुसैन		36.00
हमारी पोथी (भाग–2)	सम्पादन समिति		28.00
हमारी पोथी (भाग–3)	सम्पादन समिति		52.00
हमारी पोथी (भाग–4)	सम्पादन समिति		70.00
हमारी पोथी (भाग–5)	सम्पादन समिति		72.00
हमारी पोथी (भाग–6)	सम्पादन समिति	Set 358.00	100.00
हमारे बुज़ुर्ग (भाग–1)	माइल ख़ैराबादी		27.00
हमारे बुज़ुर्ग (भाग–2)	माइल ख़ैराबादी	Set 43.00	16.00
हमारे हुज़ूर (सल्ल०)	इरफ़ान ख़लीली		26.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

ख़राबियां जो दिखायी नहीं देतीं

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

ज़िन्दगी में कुछ ख़राबियां ऐसी होती हैं जिनको सभी जानते हैं । उनके बुरी होने में किसी को कोई संदेह नहीं होता । जैसे झूठ बोलना, किसी को धोखा देना, चोरी करना, मदिरापान, व्यभिचार, अकारण हत्या करना, दिये हुए वचन से फिर जाना और दुराचार इत्यादि । ये ऐसी बुराइयां हैं जिनको सभी बुरा जानते हैं, इनके बुरा होने से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता । किंतु कुछ बुराइयां और ख़राबियां ऐसी होती हैं जो अत्यंत ख़तरनाक होती हैं, जिनके कारण मानव-जीवन अत्यंत कुरूप होकर रह जाता है, जीवन का सौंदर्य और उसकी गरिमा नष्ट हो जाती है, किंतु आदमी को इसका एहसास नहीं होता । वह समझता है कि सब ठीक चल रहा है, जीवन ठीक ढंग से बीत रहा है । उसके दिल में सिरे से कोई खटक पैदा ही नहीं होती ।

वह ख़याल करता है कि वह अपने जीवन के साथ कोई ग़लत नीति अपनाए हुए नहीं है । बल्कि उसकी ज़िन्दगी उसी तरह की गुज़र रही है, जैसी गुज़रनी चाहिए थी । हम यहां कुछ ऐसी ख़राबियों का उल्लेख करना चाहते हैं जो साधारण ख़राबियां नहीं हैं, बल्कि वे ऐसी ख़राबियां हैं जिनके कारण मानव जीवन-विकृत होकर रह जाता है । उसकी सारी आत्मा नष्ट हो जाती है और जीवन की वे सभी संभावनाएं सहसा समाप्त हो जाती हैं, जिन संभावनाओं के द्वारा मनुष्य उच्चता के शिखर पर पहुंच सकता था ।

उन दिखायी न देने वाली ख़राबियों में से एक ख़राबी यह है कि मनुष्य क्षुद्र से जुड़ जाए और अपनी महिमा को गवां बैठे । क्योंकि यह संभव नहीं कि क्षुद्र से जुड़कर कोई अपनी महानता को बचा सकता है । क्षुद्र से जुड़ने के बाद आदमी क्षुद्र ही हो सकता है, क्योंकि किसी दूसरी संभावना के लिए उसने अपने यहां जगह ही शेष न रहने दी । उदाहरणत: किसी व्यक्ति ने यदि धन कमाने को ही सब कुछ समझ लिया और इस दुनिया के सिवा किसी और जीवन में उसे विश्वास नहीं, तो फिर अमरत्व के गुण उसमें कैसे पैदा हो सकेंगे ? धन के पीछे वह दौड़ता रहेगा और उसकी यह दौड़ कभी समाप्त होनेवाली नहीं । उस पर यह सूत्र चरितार्थ नहीं हो सकता–

अमरत्व पुत्रोस्य (अर्थात तुम अमरत्व के पुत्र हो)

अमरत्व का उसके विचार-भाव और मनोवृत्ति से कोई संबंध स्थापित नहीं हो सकता । वह तो मृत्यु से जुड़ गया । अब उसके यहां वह जीवंतता संभव नहीं जो उस व्यक्ति के यहां पायी जाएगी, जिसके यहां अमरता से भिन्न किसी चीज़ के लिए जगह नहीं । जो चलता है तो अमरत्व की भूमि पर, जिसकी कामनाएं अमरत्व से संबद्ध होती हैं । उसके यहां अमरत्व से रिक्त कोई चीज़ नहीं पायी जाती । एक धनवान की सोच और निर्धन की सोच में मौलिक अंतर होता है । धनवान जो भी सोचेगा उसकी सोच में निर्धनता का भाव बाधा नहीं डाल सकता ।

इसलिए कि उसके यहां निर्धनता का अभाव है । वह अपने को धनवान मानकर चलता है, उसकी योजनाओं में कहीं निर्धनता दिखायी नहीं दे सकती । ठीक इसी तरह अमरत्व के वातावरण में कहीं भी मृत-भाव को ठिकाना नहीं मिल सकता । ऐसा व्यक्ति अमरत्व से जिसका नाता हो कोई ऐसा कार्य नहीं कर सकता जो क्षुद्र प्रकृति के लोगों का होता है । स्वार्थपरता, लोभ, ईर्ष्या और किसी को हानि पहुंचाने की भावना उसके यहां नहीं पायी जा सकती । जो कोई अपने को ईश्वर की अनुकंपा से निरंतर आच्छादित महसूस करेगा, ईश्वर के प्रति अनिवार्यत: वह आभारी होगा । वह देख रहा होगा कि ईश्वरीय अनुकंपा की वर्षा में अहंकार का नहीं बल्कि कृतज्ञता के प्रकाशन का सुअवसर होता है ।

दूसरी ख़राबी जो साधारणतया हमें दिखायी नहीं देती वह है यह दशा कि श्रेष्ठ का चालक अश्रेष्ठ हो । मनुष्य के जीवन में जिन उच्च भावनाओं को प्रेरक का कार्य करना चाहिए, उनके स्थान पर यदि वह निम्न कोटि की चीज़ों से प्रेरित होकर कार्य करता है तो यही कहा जाएगा कि श्रेष्ठ का मार्गदर्शन अश्रेष्ठ कर रहा है । उसका जीवन यदि प्रेम और करुणा के द्वारा संचालित नहीं होता बल्कि उसका

जीवन-रथ घृणा, स्वार्थपरता और लोभ आदि के द्वारा चलता है तो यही कहा जाएगा कि श्रेष्ठ पर अश्रेष्ठ ने अपना अधिकार जमा लिया है, श्रेष्ठ ने कौड़ियों के बदले अपनी बड़ाई बेच दी है । किंतु वह इसे स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि समय की धूल ने उसे ऐसा अंधा बना दिया है कि उसे यह ख़राबी दिखायी ही नहीं देती ।

एक और उदाहरण लें । मानव श्रेष्ठ है । मानव का व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक जीवन, मनुष्य का अपना व्यक्तिगत स्वभाव हो या उसकी अपनी-जीवन प्रणाली, सब कुछ ईश्वरीय आदेश के अधीन होना चाहिए । मानव समाज के लिए ईश्वर ने जो आदेश दिये हैं उनका पालन करना चाहिए । हमारी आर्थिक व्यवस्था हो या राजनीतिक व्यवस्था, हरेक का संचालन ईश्वर के हाथ में होना चाहिए । हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईश्वर की मरज़ी और प्रसन्नता को अपने सामने रखें । हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जिसमें ईश्वरीय आदेश की उपेक्षा हो रही हो ।

आज हम देखते हैं कि लोगों ने, विशेष रूप से उन क़ौमों ने जो उन्नति के शिखर पर दिखायी देती हैं, ज़िन्दगी की बागडोर ईश्वर के हाथ से छीन ली है । श्रेष्ठ की मौजूदगी में अश्रेष्ठ ने सब कुछ अपने हाथ में ले रखा है । उसने अपना संचालक अपनी इच्छाओं और वासनाओं को बना रखा है, जिसके कारण मानवता कई भागों में विभक्त होकर रह गयी है ।

एक राष्ट्र ने अपने लिए जो मापदण्ड बना रखे हैं, वे और हैं और दूसरी क़ौमों के यहां कुछ दूसरे ही मापदण्ड पाये जाते हैं । दूसरी क़ौम के साथ ज़ुल्म हो तो उसे ज़ुल्म नहीं समझता, उसे केवल अपनी चिंता होती है । उसकी भूख इतनी बढ़ी हुई होती है कि वह अन्य राष्ट्रों पर भी अपना ही नियंत्रण चाहता है । राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद वर्तमान युग के हथकण्डे रहे हैं । कमज़ोर क़ौम को अपना ग़ुलाम बनाना पाश्चात्य देशों का खेल रहा है । कभी किसी चिंतक को उसमें अन्याय महसूस भी हुआ तो उसने ज़ुल्म को हटाने के लिए ज़ुल्म का ही सहारा लिया । वह कर भी क्या सकता था ! उसके पास वह समझ कहां और उसके यहां वह विशाल हृदयता कहां कि वह हरेक के साथ इन्साफ़ कर सके ! आज प्रजातंत्र के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उसमें प्रजातंत्र कितना है, इस बात को जानने वाले भली-भांति जानते हैं ।

एक तीसरी ख़राबी भी है जो लोगों को दिखायी नहीं देती, जिसके देखने में लोग असमर्थ नज़र आते हैं । इस ख़राबी को वही समझ सकता है जो मानव के उस उच्च स्थान से परिचित हो जिस स्थान के लिए ईश्वर ने उसे पैदा किया है । ईश्वर ने मनुष्य के लिए मनुष्य की महानता के समस्त द्वार खुले रखे हैं । ईश्वर ने मनुष्य को अपना दर्पण बनाया है जिसके द्वारा वह चाहता है कि उसके उच्चतम गुणों की अभिव्यक्ति हो । ईश्वर ने मनुष्य के लिए सारे जगत की रचना की । उसके लिए सूर्य-चन्द्र के दिये जलाए । तारों का आकाश सजाया, नाना प्रकार के फल-फूल और अनाज पैदा किये और स्वयं मनुष्य को एक महान कार्य के लिए यह उच्चता प्रदान की । और वह महान कार्य यह है कि वह ईश्वर की महिमा और उसके सौंदर्य एवं प्रताप को महसूस करे और इसकी ओर से कभी भी ग़ाफ़िल न हो ।

यह वह प्रीतिकर बोझ है जिसे उठाने के लिए उसमें हर प्रकार की क्षमता रखी । उसे विवेक और चेतना से आभूषित किया । उसके हृदय में प्रेम जैसी बहुमूल्य संपदा रख दी । संसार की सारी वस्तुओं पर उसे अधिकार प्रदान किया, इसे उनका मालिक बनाया, किंतु हुआ यह कि मनुष्य उन चीज़ों का और जो सुख-सामग्री उसके लिए जुटाई गयी थी उसी का आसक्त और दास बनकर रह गया । उसके जीवन का मात्र यही उद्देश्य हो गया कि सुख-सामग्री जुटाए और उन्हीं चीज़ों को जुटाने और निखारने में लगा रहे और उन्हीं सांसारिक वस्तुओं को समेटने और उन्हीं की चिंता में जिए और उनसे मिलने वाली ख़ुशियों को अपनी ख़ुशी समझे । इसका परिणाम यह हुआ कि जीवन में वास्तविक महत्व मानव का नहीं रहा बल्कि सांसारिक वस्तुएं ही मूल्यवान हो गयीं ।

देखने में यह लगता है कि मनुष्य चीज़ों को इस्तेमाल कर रहा है, किन्तु सत्य यह है कि चीज़ें ही उसे इस्तेमाल कर रही हैं । वस्तुएं उसकी नहीं, बल्कि वह उन वस्तुओं का होकर रह गया । इससे बड़ी विडंबना तथा ख़राबी और क्या हो सकती है ? किन्तु यह ख़राबी लोगों को दिखायी नहीं देती । यह ख़राबी तो उसी रूप में दिखायी दे सकती है जबकि मनुष्य को अपनी वास्तविक गरिमा का एहसास हो । वे लोग मानवता के बड़े उद्धारक होंगे जो लोगों की बेहोशी और मूर्छा को दूर करें और जिसके फलस्वरूप मनुष्य अपनी महिमा और सौंदर्य को देख सके ।

सहनशीलता : एक विशिष्ट मानवीय गुण

■ कौसर लईक़

सहनशीलता अर्थात सहिष्णुता मनुष्य का वह गुण है, जो मनुष्य को मनावमुक्त रखने और वातावरण में शांति पैदा करने में एक मुख्य भूमिका निभाता है । सहनशीलता व्यक्ति गाम्भीर्य में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय पहाड़ की तरह होता है । उसकी मिसाल चंदन के पेड़ की तरह होती है कि चंदन का पेड़ कुल्हाड़ी द्वारा काटे जाने पर भी कुल्हाड़ी को सुगंधित किये बिना नहीं रहता ।

सहनशील व्यक्ति क्रोध-स्वभाव का नहीं होता । यद्यपि ऐसा नहीं है कि सहनशील व्यक्ति को दुष्टों की दुष्टता पर क्रोध नहीं आता । उसे भी क्रोध आता है, किन्तु उसकी सहनशीलता उस क्रोध को निष्क्रिय करती रहती है । वह क्रोध को व्यक्ति पर प्रभावी नहीं होने देती । सहनशीलता व्यक्ति को कठिन से कठिन अवसर से सहज ही गुज़र जाने में सहायक होती है । सहनशीलता जिस व्यक्ति या जिस समाज में पायी जाती है, वहां शांति, प्रेम, सौहार्द और उदारता का साम्राज्य होता है । सहनशीलता व्यक्ति की कमज़ोरी और कायरता नहीं होती, बल्कि वह बड़े से बड़े संकट और शत्रु को फ़तह कर लेने का यंत्र और अति कारगर साधन होती है ।

वास्तव में सहनशीलता वह कवच है, जिसे ओढ़ लेने के बाद मनुष्य बड़ी से बड़ी चोटों को सहज ही झेल जाता है । उस पर जितनी अधिक चोटें पड़ती हैं, वे उसे तोड़ने के बजाय और अधिक मज़बूत करती जाती हैं । सहनशील व्यक्ति के आगे पहाड़ जैसे संकट भी चींटी के समान प्रतीत होते हैं ।

इसी कारण सहनशील व्यक्ति को प्राय: सफल और व्यक्तित्व में श्रेष्ठ पाया जाता है । संसार में जितने भी महापुरुष और समाज-सुधारक हुए हैं, उनमें अन्य गुणों के अतिरिक्त प्राय: सहनशीलता का गुण ही सर्वोपरि रहा । गांधी जी को अपने अध्ययनकाल और उसके बाद स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में एक से एक अपमान और दुष्टों की दुष्टता का सामना करना पड़ा । वे अपनी सहनशीलता की शक्ति से ही डटकर हर दुर्जेय स्थिति में सफलता प्राप्त करते चले गये और आज भारत के राष्ट्रपिता जैसे सर्वोच्च पद पर मृत्योपरांत भी आसीन हैं ।

ईश्वर के अंतिम संदेष्टा अर्थात पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की जीवनी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पैग़म्बर सहनशीलता के मूर्तरूप थे । उनके अन्दर सहनशीलता हद दर्जे की थी । जीवनी में है कि वे दुष्टों की दुष्टता पर क्रोध प्रदर्शन नहीं करते थे । कहा जाता है कि एक बुढ़िया जो पैग़म्बर से सख़्त नफ़रत करती थी और अपने वशभर हर प्रकार की दुष्टता का व्यवहार उनके साथ करती थी । पैग़म्बर उस बुढ़िया के यहां से जब गुज़रते तो वह उन पर कूड़ा डाल देती और भला-बुरा कहती । लेकिन पैग़म्बर (सल्ल॰) उस बुढ़िया को कुछ न कहते, बल्कि कूड़ा झाड़ कर आगे बढ़ जाते ।

एक बार वह बुढ़िया कई दिन तक उन्हें दिखायी न दी और न ही उसने कूड़ा डाला तो पैग़म्बर ने उसके बारे में लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि वह सख़्त बीमार हैं । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उसकी कुशलता पूछने उसके घर पर गये । पैग़म्बर के इस व्यवहार से वह बुढ़िया बहुत शर्मिन्दा हुई और पैग़म्बर की समर्थक हो गयी । इसी प्रकार पैग़म्बर ताइफ़ गये और लोगों को सत्य की शिक्षा देनी शुरू की, तो दुष्ट-प्रवृत्ति के लोगों ने उन पर पत्थरों से हमला कर दिया, यहां तक कि पैग़म्बर लहूलुहान हो गये, लेकिन यह सब होने के बाद भी पैग़म्बर (सल्ल॰) ने न किसी के लिए कोई बद्दुआ की और न बाद में कोई प्रतिशोध लिया । इसका प्रभाव यह हुआ कि जब उन दुष्टों का अंत:करण जागा तो वे सभी अपनी दुष्टता छोड़कर पैग़म्बर के पीछे चलने वाले बन गये ।

वास्तव में सहनशीलता वह कवच है, जिसे ओढ़ लेने

के बाद मनुष्य बड़ी से बड़ी चोटों को सहज ही झेल जाता है । उस पर जितनी अधिक चोटें पड़ती हैं, वे उसे तोड़ने के बजाय और अधिक मज़बूत करती जाती हैं । सहनशील व्यक्ति के आगे पहाड़ जैसे संकट भी चींटी के समान प्रतीत होते हैं । अतएव जीवन में आगे बढ़ने के लिए सहनशीलता का गुण व्यक्ति में होना अतिआवश्यक है और सहनशीलता का गुण उत्पन्न हो ही नहीं सकता जब तक कि व्यक्ति अहंकार का परित्याग करके किसी के भी बुरे बर्ताव पर उसके बदले अच्छा व्यवहार करने का आदि न बने । महाभारत में क्या अच्छी शिक्षा दी गयी है । कहा गया–

न पापे प्रतिपापः स्यात् साधुरेव सदा भवेत् ।
आत्मनैव हतः पापो यः पापं कर्तुमिच्छति ।।

(वन॰ 207/45)

"यदि कोई अपने साथ बुरा बर्ताव करे तो स्वयं बदले में उसके साथ बुराई न करे । सबके साथ सदा सद्व्यवहार ही करे । जो पापी दूसरों का अहित करना चाहता है, वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है ।"

(अनुवादक : साहित्याचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम, प्रकाशक: गोबिन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर, नवां संस्करण, सं॰ 2058)

अर्थात महाभारत का उपरोक्त मंत्र स्पष्ट कर दिया कि पीड़ित जब सहनशीलता, धैर्य और सदाचार से काम लेता है और बुराई करने वालों के साथ बुराई के बदले भलाई का व्यवहार करता है, तो ज़ालिम व अत्याचारी जो अपनी शक्ति के नशे में चूर होकर मासूम एवं निर्दोषों पर जो भी अत्याचार करता है, उसका वह अत्याचार उस पापी का काल बनकर स्वयं उसका विनाश अवश्यत: करता है । इसे जुल्म ढाने वालों को भूलना नहीं चाहिए । इस संदर्भ के उदाहरणों से हमारे धर्मग्रंथ और इतिहास भरे पड़े हैं ।

एक बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि सहनशील व्यक्ति की सहनशीलता उसकी कोई दुर्बलता या कमज़ोरी नहीं होती, बल्कि उसका निर्मल और उच्च विशुद्ध स्वभाव सहनशीलता के रूप में सामने होता है । वह हर अनैतिकता के प्रतिकार की शक्ति रखने के बाद भी अपने विमल, मृदुल एवं अविकृत अंत:करणवश अपने साथ हुए हर अनाचार एवं नृशंसता को नज़रंदाज़ कर जाता है । जिस प्रकार सोना अपने ऊपर अनेकानेक गंदगियां आ जाने के बाद भी अपने में जंग नहीं लगने देता, जिस प्रकार चंदन अपने ऊपर विषैले भुजंगों के लिपटे रहने के बाद भी उनके विष का प्रभाव अपने अन्दर नहीं आने देता और विशुद्धत: सुगंधित ही रहता है, उसी प्रकार एक सज्जन और शरीफ़ व्यक्ति अपने धैर्य और अपनी सहनशीलता से हर प्रकार की अनैतिकता की गंदगियों से अपने आपको पवित्र रखता है ।

इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर धर्म विरोधी लोग तरह-तरह की झूठी बातें गढ़-गढ़कर उनके और उनके साथियों के विरुद्ध दुष्प्रचार कर रहे थे और हर प्रकार से उनको तकलीफ़ पहुंचाने के उपक्रम कर रहे थे । इससे पैग़म्बर और उनके साथीगण बहुत ही परेशान और उत्पीड़ित थे । उस समय ईश्वर ने अपनी प्रकाशना (वह्य) के माध्यम से पैग़म्बर इस संकट का यह हल बताया–

"जो कुछ वे कहते हैं, उस पर धैर्य से काम लो और भली रीति से उनसे अलग हो जाओ ।" (क़ुरआन, 73/10)

अर्थात उन दुष्टाचारियों की दुष्टता पर सहनशीलता और धैर्य से काम लो । उनकी दुष्टता को एक सुशील और शरीफ़ सज्जन पुरुष की तरह अनदेखा कर दिया करो । न उनको अपने मुंह लगाओ और न उनके मुंह लगो ।

वस्तुत: दुष्टाचारियों की दुष्टता का यथासंभव अनदेखा कर जाना और सहनशक्ति से काम लेकर उनसे विलग हो जाना एक ऐसा हथियार और ढाल है जिसके माध्यम से सैकड़ों प्रकार के तनाव और विध्वंसों से अपने आपको सुरक्षित कर लेना है, जिसकी स्थानापन्नता कोई चीज़ हो नहीं सकती । यद्यपि दुष्टों की दुष्टता पर क्रोध का आना स्वाभाविक है । इसी कारण क़ुरआन में एक स्थान पर सुशील एवं ईश्वर भक्तों के गुणों का उल्लेख करते हुए कहा गया–

"(वे) क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा कर दिया करते हैं ।" (क़ुरआन, 3/34)

अर्थात जो ईश्वर के सच्चे भक्त और सुशील होते हैं वे दुष्टों की दुष्टता पर आने वाले स्वाभाविक क्रोध को भी रोकते हैं और इतने दयालु होते हैं कि प्राय: क्षमा कर दिया करते हैं ।

अत: हम सबको चाहिए कि अपने अंत:करण को उच्च एवं विमल बनाएं और सहनशीलता का दामन कभी न छोड़ें और साथ ही किसी भी भाई के साथ वह आचरण एवं व्यवहार कदापि न अपनाएं जो अपने स्वयं के साथ यदि कोई व्यवहार करे तो हम पसन्द न करते हों ।

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY



گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

دافع

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گھٹیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشتک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

KIDS CARE

MONTESSORI & PRIMARY SCHOOL



- Montessori to Class - V
- A Huge Playground for Outdoor Games
- Efficient and Trained Teachers
- Learning through Computers
- Homely Environment
- CCTV Monitored

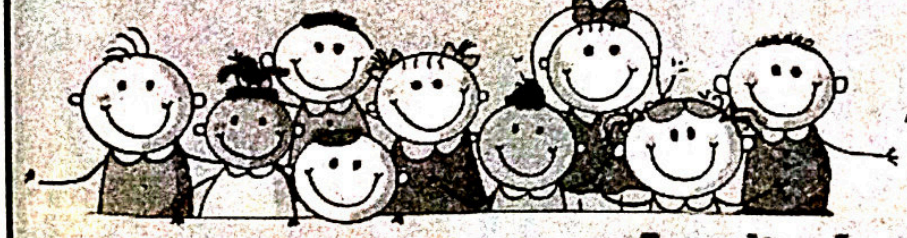

ADMISSION OPEN

A unit of
Al-Falah Educational & Welfare Trust

58, Tiljala Road, Kolkata - 700046

CONTACT : 9874359433 / 9432340275

Website : www.kidscareschool.org

'माधोराय का धरहरा'–न्याय और सद्भाव का प्रतीक

■ डॉ॰ रमेश प्रसाद गर्ग
(वाराणसी)

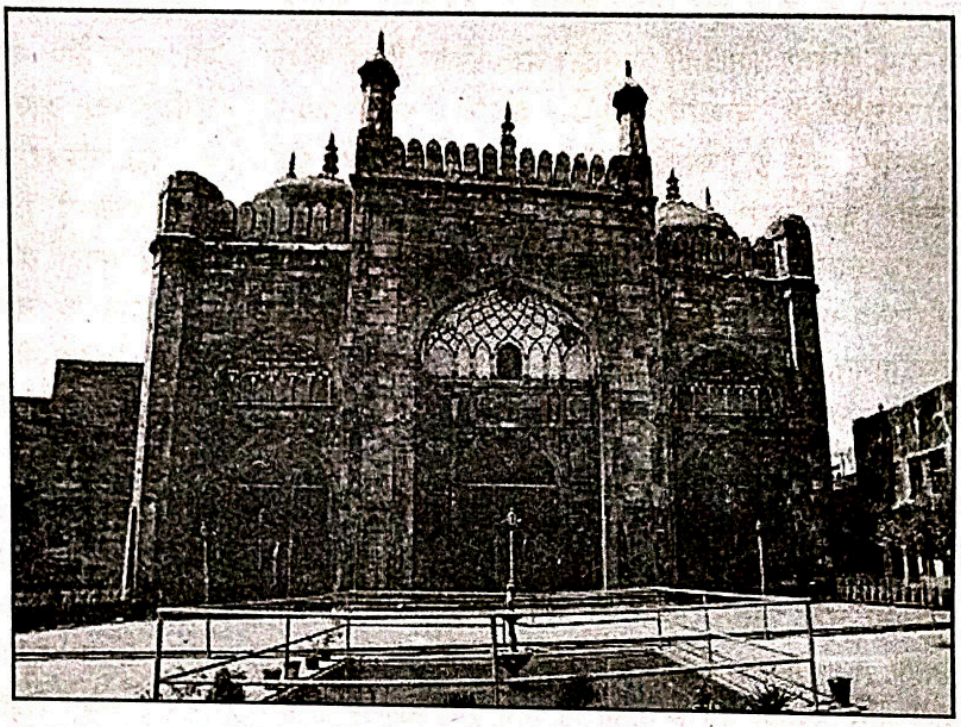

मुग़ल सम्राटों में औरंगज़ेब ही एक ऐसा सम्राट था जो अपने पूर्वजों की नीति से हटकर सादगी के साथ जीवन बिताता था और क़ुरआन की नक़ल लिखकर तथा टोपी सीकर उसकी आमदनी से अपना ख़र्च चलाता था वह रियाआ (प्रजा) के धन को अपने निजी काम में प्रयोग नहीं करता था।

वह एक न्यायप्रिय मुसलमान था। शरीअत (धार्मिक क़ानून) के विरुद्ध कोई कार्य पसन्द नहीं करता था। उसके बारे में सबसे बड़ा आरोप यह है कि उसने हिन्दुओं के मंदिरों को तुड़वाकर उन पर मस्जिदें बनवाई। काशी (बनारस) में औरंगज़ेब की तीन प्रमुख यादगारें हैं, जिन्हें ज्ञानवापी की मस्जिद, माधोराय के धरहरे की मस्जिद तथा फव्वारे की मस्जिद के नाम से जाना जाता है।

औरंगज़ेब पर मंदिरों के तोड़े जाने का आरोप ग़लत है। उसने अपने शासनकाल में 1057 मंदिरों को जागीरें प्रदान की हैं जो उसके फ़रमानों से स्पष्ट है। बालाजी मंदिर को उसी ने दोबारा बनवाया था और उसकी देख-रेख के लिए साढ़े तीन सौ बीघा भूमि दान दी थी। इसी तरह काशी में जंगमबाड़ी मठ को उसने जागीर दी है। उसका एक फ़रमान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला भवन में मौजूद है जो उसने उस समय के क़ारिन्दे अबुल हसन के नाम लिखा है, जिसमें यह स्पष्ट आदेश है कि "कोई पुराना मंदिर न तोड़ा जाए। किसी ब्राह्मण को न सताया जाए। हमें ऐसी शिकायतें मिली हैं कि कुछ लोग ब्राह्मणों को उनके पूजापाठ के अधिकारों से वंचित कर देना चाहते हैं। किसी भी ब्राह्मण को उसके अधिकार से वंचित न किया जाए।

औरंगज़ेब की एक रानी उदयबाई स्वयं हिन्दू थीं तथा उनकी बड़ी बहू राजा जयसिंह की पुत्री थीं। जयसिंह औरंगज़ेब की फ़ौज के प्रधान सेनापति थे। इसके अतिरिक्त जयवंत सिंह भी उसकी सेना में सेनापति के पद पर था तथा अनेकों हिन्दू सेना में तथा अन्य ऊंचे-ऊंचे पदों पर नियुक्त थे। इससे यह सिद्ध होता है कि औरंगज़ेब पर जो आरोप लगाए जाते हैं, वे असत्य एवं भ्रामक हैं। औरंगज़ेब दक्षिण भारत में पचीस वर्षों तक युद्ध करता रहा। अजन्ता एलोरा के मंदिरों के निकट से सैकड़ों बार अपनी सेना लेकर आया गया परन्तु उन मंदिरों को ज़रा-सी भी क्षति नहीं पहुंचायी। यदि वह मंदिरों का दुश्मन होता तो अजन्ता एलोरा के मंदिरों

का निशान तक बाक़ी नहीं मिलता । उसने पचास वर्ष शासन किया । यदि वह चाहता तो उसके विशाल साम्राज्य में एक भी मंदिर दिखायी न देता । लेकिन उसने हमेशा मज़हबी रवादारी (सहिष्णुता) से काम लिया । यह अवश्य है कि वह इन्साफ़पसन्द बादशाह था । इन्साफ़ के मामले में किसी की न सुनता था न ही तअस्सुब (भेदभाव) से काम लेता था । जिसकी ग़लती होती उसको सज़ा अवश्य देता था । इसमें हिन्दू-मुसलमान का भेदभाव नहीं करता था ।

काशी में औरंगज़ेब ने अपने जलूस सल्तनत (शासन स्थापना) के दूसरे वर्ष 1070 हिजरी अर्थात सन 1659 ई॰ में जामा मस्जिद ज्ञानवापी बनवाई । यह मस्जिद किसी मंदिर को तोड़कर नहीं बनवायी गयी है । बल्कि मंदिर के बगल में बनवाई गयी है, जिसमें अकबर बादशाह के समय 'दीने इलाही' का मदरसा स्थापित था ।

ज्ञानवापी के बाद दूसरी मशहूर मस्जिद धरहरे की है जो औरंगज़ेब की बनवाई हुई है । यह मस्जिद गंगा के किनारे पंचगंगाघाट पर स्थित है । शाही फ़रमानों में इस मुहल्ले का नाम माधोराय दर्ज है । जिस वजह से इसे माधोराय का धरहरा कहा जाता है । इसकी दीवार से मिली हुई दीवार सीताराम मंदिर की है जो औरंगज़ेब ही के परदादा अकबर के आदेश से राजा मानसिंह द्वारा निर्मित कराया गया था । यहां भी वही भावना छिपी हुई है । यानी हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना । जिसके अंतर्गत मंदिर और मस्जिद पास-पास बनवाए गये हैं ताकि हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर मेल-जोल बढ़े ।

औरंगज़ेब का एक फ़रमान मंदिर के अन्दर मौजूद है, जिसमें लिखा हुआ है कि मुहल्ला माधोराय, मुहम्मदाबाद बनारस में गंगा के किनारे दक्षिण तरफ़ एक मंज़िल की हवेली मौजूद है जिसमें सीढ़ियां भी है । इस इबारत से यह स्पष्ट हो गया कि इस शहर का नाम मुहम्मदाबाद बनारस है । इस मस्जिद के दो मीनार थे जो गंगा की सतह से 200 फ़ीट ऊंचे और मस्जिद की छत पर से 150 फ़ीट ऊंचे थे । मस्जिद की छत से मीनार तक जाने के लिए एक सौ इक्कीस सीढ़ियां थीं । बाबू शिवप्रसाद के अनुसार मीनार से पूरा नगर घरौंदे की तरह मालूम होता था । ये मीनार गंगा के घाटों की शान थे । विदेशी पर्यटक इन मीनारों से संपूर्ण नगर तथा आसपास के क्षेत्रों का नज़ारा आसानी से करते थे ।

माधवराय मुहल्ले के कारण ही कुछ लोगों को यह भ्रम है कि इसे माधोराय ने बनवाया था या माधोराय के मंदिर को तोड़कर इसकी स्थापना की गयी है । ऐसा विचार असत्य तथा भ्रामक है । इस मस्जिद की स्थापना से पूर्व यहां किसी मंदिर का कभी कोई अस्तित्व नहीं था बल्कि सरकारी बैतुलमाल (कोष) की ज़मीन पर इस मस्जिद की स्थापना की गयी है । इसके निर्माण के समय औरंगज़ेब के कुछ कार्यकर्ताओं ने सीताराम मंदिर के साथ मुज़ाहमत (हस्तक्षेप) की, जिसकी सूचना मंदिर के महंत गोसाई जी ने औरंगज़ेब के पास भेजी तो फ़ौरन वहां से फ़रमान जारी हुआ कि "मंदिर के साथ किसी तरह की मुज़ाहमत (हस्तक्षेप) न की जाए, और मंदिर को मुन्हदिम (तोड़-फोड़) होने से सुरक्षित रखा जाए ।"

इस मस्जिद के बारे में ग़लत तरीक़े से यह मशहूर किया गया है कि पहले यहां मंदिर मौजूद था क्योंकि इस्लामी क़ानून के अनुसार किसी दूसरे व्यक्ति की जायदाद की ज़मीन पर चाहे वह मुसलमान हो या ग़ैर-मुसलमान, मस्जिद बनाने की इजाज़त नहीं है । इस मस्जिद में मिंबर (जहां से इमामत होती है) के ऊपर दीवार में जो क़तबा (शिलालेख) लगा हुआ है वह शाहआलम बादशाह के समय का है जब उसकी मरम्मत हुई इसमें 1198 हिजरी अर्थात 1784 ई॰ दर्ज है । इसके निर्माण का कारण एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, जो प्रसिद्ध है–

"पंडित लालाराम काशी के पंडितों के एक प्रसिद्ध घराने से संबंध रखते थे । उनकी एकमात्र पुत्री शकुन्तला थी जिस पर इबराहीम ख़ां कोतवाले शहर जो औरंगज़ेब की तरफ़ से बनारस का हाकिम मुक़र्रर था, मुग्ध हो गया । एक दिन उसने पंडित जी के पास एक आदमी भेजकर उनको और उनकी लड़की को अपने घर लाने का आदेश दिया, लेकिन शकुन्तला किसी तरह राज़ी न हुई । इसलिए एक महीने का समय मांगा । कोतवाल ने मंज़ूर कर लिया । फिर शकुन्तला वेष बदलकर मुग़ल शाहज़ादों जैसा लिबास पहनकर घोड़े पर सवार होकर दिल्ली के लिए रवाना हो गयी ।"

जुमे (शुक्रवार) के दिन औरंगज़ेब की सवारी जामा मस्जिद जाने के लिए निकली । जुमे की नमाज़ के बाद औरंगज़ेब जब मस्जिद से बाहर निकला तो सीढ़ियों पर देश के कोने-कोने से आये हुए फ़रियादी दोनों रास्तों पर खड़े थे । उनमें शकुन्तला भी फ़रियादी की हैसियत से शामिल

हो गयी । बादशाह की जब उस पर नज़र पड़ी तो उसने पहचान लिया कि यह कोई लड़की है जो मसलेहत (समयानुकूल हित) से मर्दाना लिबास में है । बादशाह ने उसको दीवाने ख़ास में पेश करने का हुक्म दिया । जब वह हाज़िर हुई तो बादशाह ने एक दुशाला देते हुए हुक्म दिया कि सिर की पगड़ी उतारकर इसको ओढ़ लो । शकुन्तला ने फूट-फूटकर रोना शुरू कर दिया और अपनी फ़रियाद पेश की और बताया कि मैं एक ब्राह्मण की लड़की हूं और बनारस से आयी हूं । बादशाह ने उसकी बड़ी दिलजोई (ढाढ़स बंधाते हुए) करते हुए उसको क़िले के दरवाज़े तक पहुंचाया और यह हुक्म दिया कि तुम अपने पिता से कहना कि डोला सजाकर कोतवाल के दरवाज़े तक मुझे पहुंचा दिया जाए फिर मैं जो करूंगा तुम्हें मालूम हो जाएगा ।''

शकुन्तला को बादशाह के इस जवाब से पहले तो घबराहट हुई; लेकिन उसे विश्वास था कि वह अन्याय नहीं करेगा । इसलिए वह अपने पिता से इस आदेश का पालन कराते हुए डोले पर सवार कराकर कोतवाल के क़रीब लायी गयी । ठीक उसी समय जब कोतवाले-शहर यह सोचकर बेहद प्रसन्न था कि अब उसके मन की अभिलाषा पूरी होने जा रही है, वहां फ़क़ीरों की एक टोली भीख मांगने पहुंची । कोतवाल भीख देने के लिए झुका तो एक फ़क़ीर ने अपना लिबास उतारकर फेंक दिया । यह औरंगज़ेब बादशाह था । कोतवाल भयभीत हो उठा, उसके पांव तले से ज़मीन निकल गयी । बादशाह ने फ़ौरन शाही अमले (कर्मचारियों) को आदेश दिया कि कोतवाल को फ़ौरन गिरफ़्तार करके उसका सिर तन से अलग कर दिया जाए । शकुन्तला का डोला अब घर की ओर पूरे इत्मीनान के साथ वापस हो गया । कोतवाल को मार डाला गया ।

इबराहीम ख़ां कोतवाल का मज़ार चौक थाने के पीछे नारियल बाज़ार के मोड़ पर स्थित मस्जिद की दुकान के अन्दर है, जिसे आज भी देखा जा सकता है ।

शकुन्तला के घर पहुंचते ही औरंगज़ेब भी उसके घर पहुंचा और पानी मांगते हुए कहा कि जिस दिन शकुन्तला ने मेरे पास फ़रियाद पेश की थी, उसी दिन से मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक इस ब्राह्मण लड़की के साथ इन्साफ़ न कर लूंगा, हलक़ के नीचे पानी का एक क़तरा भी न उतारूंगा । पंडित जी ने अपनी जायदाद के एक चबूतरे पर बादशाह को बैठाया । बादशाह ने पानी पिया और नमाज़ अदा की । फिर खाना खाया । जब रुख़सत होने लगा तो पंडित जी विनम्रतापूर्वक खड़े हो गये । कहा : ''जहांपनाह ! जिस भूमि को आपने अपने सजदों से पवित्र बना दिया है, अब हम उसको किसी दूसरे काम में इस्तेमाल न करेंगे ।''

शहंशाह ने बाद में एक फ़रमान लिखा, ''इस मस्जिद के मुतवल्ली हमेशा इस ख़ानदान के लोग रहेंगे और यह फ़रमान ताम्रपत्र पर इस ख़ानदान में सुरक्षित है । पंडित लालाराम की इसी ज़मीन पर जो बैतुलमाल में दाख़िल हो चुकी थी । औरंगज़ेब ने यह मस्जिद बनवाई । इस मस्जिद के इमाम और ख़तीब को औरंगज़ेब के समय से ही वज़ीफ़ा मिलता चला आ रहा है । सुल्तान फ़र्रूक़सियर के फ़रमान से जो 1124 हिजरी का है, यह मालूम होता है कि औरंगज़ेब के समय में मुहम्मद हुसैन इस मस्जिद के इमाम थे । उनके बाद शैख़ हबीबुल्लाह, फिर सैयद मुहिबुल्लाह, फिर सैयद नज़र मुहम्मद, फिर अली अकबर मुक़र्रर हुए । अंग्रेज़ों के ज़माने तक हज़रत मौलाना रज़ा अली साहब, कुतुब बनारस, इमाम थे, जिनका देहांत 1312 हिजरी में हुआ । मस्जिद में रमज़ान के महीने में तरावीह की नमाज़ होती है तथा जुमे की नमाज़ भी बाक़ायदा तौर पर होती है । धरहरे का गंगा के किनारे वाला मीनार 31 अक्तूबर 1949 ई० को दस बजे रात को अचानक गिर गया । दूसरे मीनार को पुरातत्व विभाग ने कमज़ोर बताकर उतरवा दिया, जिससे गंगा के घाटों की शान धूमिल हो गयी ।

औरंगज़ेब की बनवाई हुई फव्वारे की मस्जिद हरतीरथ (विशेश्वरगंज के क़रीब) में स्थित है यह मस्जिद 1077 हिजरी में बनवाई गयी थी । इसके दक्षिण ओर मुफ़्ती नुरुल्लाह हुसैनी की ख़ानक़ाह है । यह मस्जिद भी मंदिर के क़रीब स्थित है । इसी प्रकार लाट कीकनाती मस्जिद भी औरंगज़ेब की ही बनवाई हुई है । मस्जिद के फ़र्श के बीच में लाट भैरव का सुतून (स्तंभ) है । जहां हिन्दुओं की तरफ़ से पूजा-पाठ होता है ।

इन मस्जिदों के अलावा कई मस्जिदें ऐसी भी हैं जो हिन्दुओं ने बनवायी हैं । जगतगंज की मस्जिद बाबू जगत सिंह की बनवाई हुई है और इसी तरह काशी विद्यापीठ की ईदगाह महाराजा प्रभुनारायण सिंह, काशी नरेश ने मुसलमानों को नमाज़ अदा करने के लिए बिना किसी मुआवज़े के दी है । यह हिन्दू मुसलमान एकता की अलामत है, जिस पर हमें गर्व करना चाहिए ।

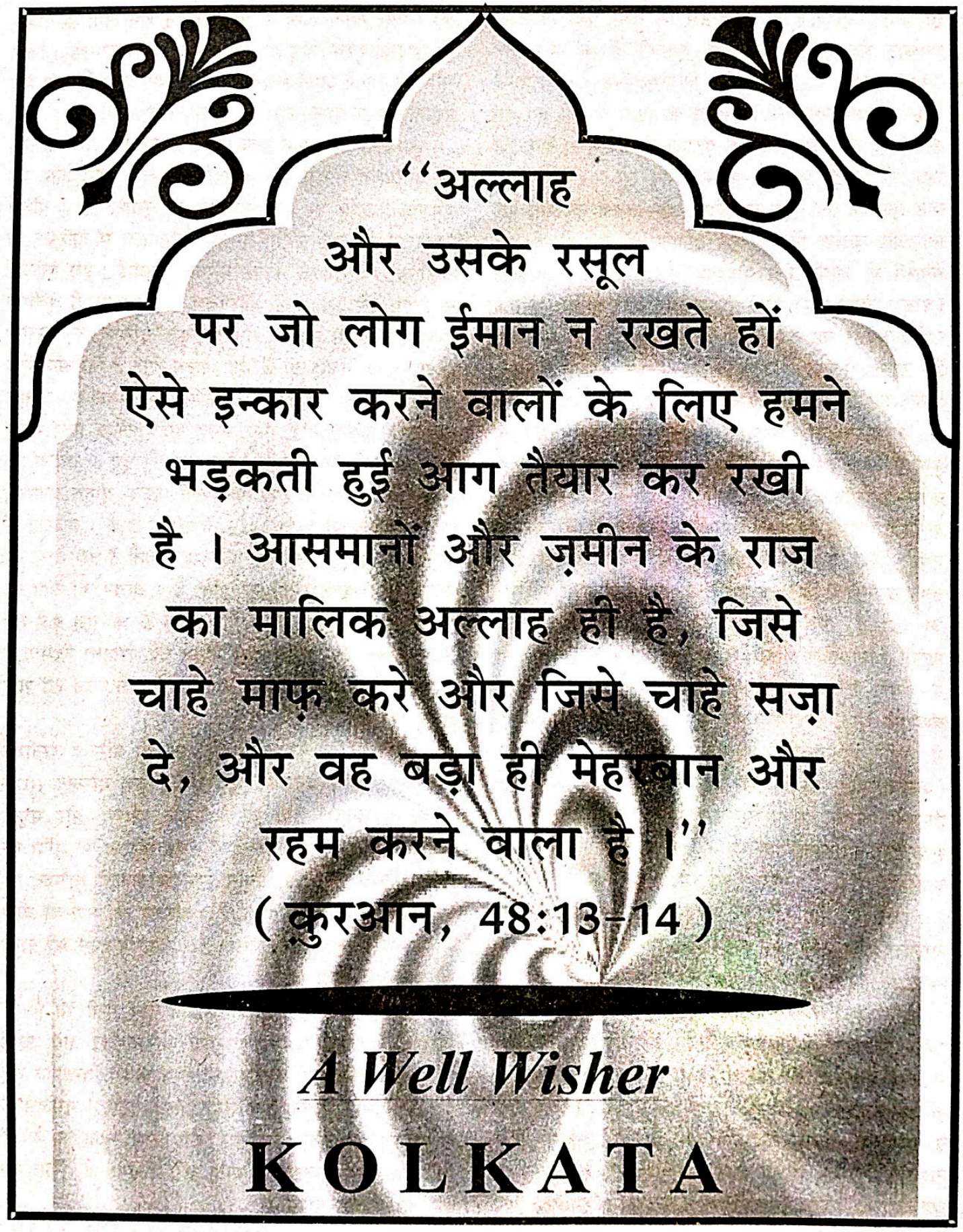
"अल्लाह
और उसके रसूल
पर जो लोग ईमान न रखते हों
ऐसे इन्कार करने वालों के लिए हमने
भड़कती हुई आग तैयार कर रखी
है । आसमानों और ज़मीन के राज
का मालिक अल्लाह ही है, जिसे
चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे सज़ा
दे, और वह बड़ा ही मेहरबान और
रहम करने वाला है ।"
(क़ुरआन, 48:13-14)
A Well Wisher
KOLKATA

''अल्लाह ईमान वालों से ख़ुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे । उनके दिलों का हाल उसको मालूम था इसलिए उसने उनपर सकीनत (शांति) उतारी, उनको इनाम में क़रीब की विजय प्रदान की, और बहुत-सा ग़नीमत का माल उन्हें प्रदान कर दिया जिसे वे (जल्द ही) प्राप्त करेंगे । अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।''

(क़ुरआन, 48:18-19)

A Well Wisher

KOLKATA

मानवता के नाम...

■ प्रो॰ अब्दुल अज़ीम जांबाज़



इस्लाम के दुश्मनों ने इस्लाम के विरुद्ध यह दुष्प्रचार किया है कि "इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। जिहाद के कारण दुनिया में आतंक का वातावरण बन चुका है। शान्ति व सुकून ख़त्म हो चुका है। इस्लाम आतंकवाद की शिक्षा देता है। इन्सानों का क़त्ल करने का आदेश देता है। मुसलमानों का अस्तित्व दुनिया के लिए ख़तरा है।" यह इस्लाम के विरुद्ध गहरी मंसूबाबंद साज़िश है।

इस्लाम और आतंकवाद के संबंध में बात करना सच्चाई के विरुद्ध है। यह बात असत्य और मिथ्यारोपण है। इस्लाम का अर्थ आज्ञापालन और अनुसरण के हैं, जो आतंकवाद के ख़िलाफ़ है। शाब्दिक, पारिभाषिक और यथार्थरूप से, किसी भी तरह से इस्लाम का आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है। व्यावहारिक रूप से यह देखा जाए, तो इस्लामी आदेश में त्याग, क़ुरबानी और आज्ञापालन का पूर्ण अर्थ मौजूद है, जो आतंकवाद से कोसों दूर है।

क्या वह धर्म आतंकवाद की शिक्षा दे सकता है, जो दूसरी क़ौमों को किसी मांग और आग्रह के बिना भाईचारे व समानता का अधिकार देता है ? क्या वह धर्म आतंकवाद सिखाता है, जो पक्षपात, क्षेत्रीयता, जातीयता, वंशवादिता और स्वार्थपरता से रोकता है ? क्या वह क़ानून शान्ति व सलामती के लिए ख़तरा हो सकता है, जो दुश्मनों के विजित क्षेत्र में एक फलदार पेड़ काटने तक को पसंद नहीं करता ? क्या वे ईमान वाले शान्ति व सलामती की स्थापना के लिए ख़तरा हो सकते हैं, जिनसे दुनिया ने अमन व शान्ति का पाठ पढ़ा ? कदापि नहीं।

इस्लाम अमन-शान्ति व मुहब्बत का धर्म है। इसका हर आदेश विश्व-शान्ति स्थापना का प्रतिभू और सलामती का सबब है। जिहाद (धर्म-युद्ध) का आदेश, इस्लाम के प्रचार के लिए नहीं दिया गया, बल्कि जिहाद की वजह विद्रोहियों की आक्रामक कार्रवाइयां और आंतरिक सुरक्षा के प्रति सरगर्मियां हैं। जिहाद का मतलब यह है कि समाज में पायी जाने वाली बुराइयां और फ़ित्ने-फ़साद को ख़त्म किया जाए, अम्नो-अमान क़ायम किया जाए।

जिहाद चाहे रक्षात्मक हो या नियोजित, यह जुल्म-अत्याचार और मानव-शत्रुता के विरुद्ध एक आन्दोलन है। अगर जिहाद की वजह और इल्लते कुफ़्र (कुफ़्र का कारण) होती, तो इस्लाम युद्ध के अवसर पर ग़ैर-मुस्लिम औरतों, बच्चों, बूढ़ों, अपाहिजों और राहिब व संन्यासियों को क़त्ल करने से मना नहीं करता। अगर जिहाद का उद्देश्य ग़ैर-मुस्लिमों को जीवन-पटल से मिटाना होता, तो शताब्दियों तक भारत पर शासन करने वाले मुस्लिम बादशाह किसी ग़ैर-मुस्लिम व्यक्ति को भारत के भू-भाग पर सांस लेने का हक़ तक न देते। उनके अराधनास्थलों को ध्वस्त कर देते, जबकि मुस्लिम शासकों के दौर में मुस्लिम विद्वानों के सद्व्यवहार की बरकत से सारे प्रिय देशवासी सुख-चैन, सुकून व राहत के शांतिमय वातावरण में जीवन व्यतीत करते रहे। मुसलमानों ने ख़तरनाक परिस्थितियों में भी ग़ैर-मुस्लिमों के साथ जिस सद्व्यवहार और भाईचारे का इतिहास लिखा है, दुनिया उसकी मिसाल पेश करने में असमर्थ है।

इस्लाम का शान्ति-सन्देश

इस्लाम, 'चलेंगे उधर जिधर की हवा है' वाली बात नहीं करता, इस्लाम हर हाल में न्याय व इन्साफ़ के ऐसे क़ानून लागू करता है, जो हवा के रुख़ को मोड़ दे । इन स्पष्ट व विशुद्ध शिक्षाओं के बाद क्या इस बात की गुंजाइश है कि यह कहा जाए कि इस्लाम अपने विरोधियों को सहन नहीं करता ! उनसे लड़ाई-झगड़े की बात करता है ! आतंकवाद की शिक्षा देता है ! और अपनी आस्था बलात दूसरों पर थोपता है ?

इस्लामी शरीअत ने मुसलमानों को इजाज़त दे रखी है कि वे दुनिया के किसी भी क्षेत्र में जाएं, क्योंकि मुसलमान सरापा रहमत व सलामती होते हैं । मुसलमान शान्ति व सलामती के लिए ख़तरा व फ़सादी नहीं होते, बल्कि शान्ति के ध्वजावाहक और सलामती के पैकर होते हैं । सारी मानवता के लिए सुखदायी और हितैषी होते हैं । अरब से अजम तक, यूरोप से अफ़्रीक़ा तक और अफ़्रीक़ा से एशिया तक मुसलमान जहां भी गये, शान्ति-सलामती, न्याय व इन्साफ़, दयालुता और एहसान का सन्देश लेकर गये । भय व आतंक, फ़ित्ना व फ़साद से परिपूर्ण समाज को उन्होंने अमन व शान्ति का गहवारा बना डाला । उनके नैतिक चरित्र की पवित्रता, मामलों की सफ़ाई, उदारता, भाईचारगी, एकता, प्रेम-मुहब्बत की बदौलत ज़ुल्म व अत्याचार के बादल छंट गये और न्याय व इन्साफ़ के फूल खिल गये ।

इस्लाम ने देश के प्यारे ग़ैर-मुस्लिम भाइयों से सामाजिक संबंध, व्यापारिक संबंध, कारोबारी संबंध, क्रय-विक्रय, लेन-देन, रहन-सहन, सुलह-समझौता इत्यादि अन्य कामों की इजाज़त दी है और सारे मामले और संबंधों में सच्चाई व ईमानदारी की पाबंदी की ताकीद की और झूठ, मकर, फ़रेब, धोखा, गबन से बचने का आदेश दिया है । मुसलमान का संबंध किसी भी धर्म या समुदाय के लोगों से हो, उसको हर हाल में यह स्मरण रहना चाहिए कि मैं तो मुस्लिम हूं । इस्लाम ने ग़ैर-मुस्लिम भाइयों के साथ सामाजिक व नैतिक संबंधों की ताकीद, मुसलमानों की तुलना में ज़्यादा की है । अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है-

"अल्लाह तुम्हें इस बात से नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ नेकी और इन्साफ़ का बर्ताव करो जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध नहीं किया है और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला है । अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है ।"

(क़ुरआन, 60:8)

क़ुरआन मजीद की इस पवित्र आयत से यह बात स्पष्ट रूप से मालूम होती है कि ग़ैर-मुस्लिमों से हर हाल में न्याय और इन्साफ़ का बर्ताव करना चाहिए, जबकि इस आयत की व्याख्या में व्याख्याकारों ने यह भी लिखा है कि न्याय व इन्साफ़ तो हर धर्म के अनुयायी के साथ करना है, यहां अर्थ ये है कि तुम उनकी दिलजोई के लिए अपने तौर पर अपने माल का कुछ हिस्सा दो । अल्लाह तआला फ़रमाता है- "लोगों से भली बात कहना और अच्छा व्यवहार करना ।"

(क़ुरआन, 2:83)

इसमें किसी रंग-नस्ल, धर्म व अकीदे की विशिष्टता नहीं, बल्कि यह आदेश सबके लिए है । मक्का के क़ुरैश की ओर से हज व उमरे के लिए किसी पर भी पाबंदी व रोक नहीं थी, यहां तक कि व्यक्तिगत दुश्मनी के लिए भी नहीं, लेकिन जब मुसलमान उमरे के इरादे से निकले, रास्ते में रोक दिये गये, उमरे की इजाज़त नहीं मिली, मुसलमानों की भावनाएं आहत हुईं और उन्हें असाधारण सदमा पहुंचा । स्वाभाविक रूप से हालात उग्र रूप धारण कर सकते थे, मुसलमान जवाबी कार्रवाई कर सकते थे, लेकिन अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों के हक़ में भी सद्व्यवहार करने का आदेश दिया और ज़ुल्म व अत्याचार करने पर रोक लगा दी । अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है-

"और देखो, एक गिरोह ने जो तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित मस्जिद (मस्जिदे हराम) का रास्ता बंद कर दिया है तो इस पर तुम्हारा गुस्सा तुम्हें इतना उत्तेजित न कर दे कि तुम भी उनके मुक़ाबले में अनुचित ज़्यादतियां करने लगो ।"

(क़ुरआन, 5:2)

न्याय व इन्साफ़ के मामले में इस्लाम में दोस्त व दुश्मन, मुस्लिम व ग़ैर-मुस्लिम का अन्तर उचित नहीं । इस्लाम दुश्मनों के साथ भी न्याय व इन्साफ़ को अनिवार्य ठहराता है, ताकि इसकी बुनियाद पर एक आदर्श समाज का निर्माण हो । अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है– "किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इतना उत्तेजित न कर दे कि इन्साफ़ से फिर जाओ । इन्साफ़ करो, यह ईशभक्ति व विनम्रता के अधिक अनुकूल है ।" (क़ुरआन, 4:8)

इस्लाम, 'चलेंगे उधर जिधर की हवा है' वाली बात नहीं करता, इस्लाम हर हाल में न्याय व इन्साफ़ के ऐसे क़ानून लागू करता है, जो हवा के रुख़ को मोड़ दे । इन स्पष्ट व विशुद्ध शिक्षाओं के बाद क्या इस बात की गुंजाइश है कि यह कहा जाए कि इस्लाम अपने विरोधियों को सहन नहीं करता ! उनसे लड़ाई-झगड़े की बात करता है ! आतंकवाद की शिक्षा देता है ! और अपनी आस्था बलात दूसरों पर थोपता है ?

ग़ैर-इस्लामी देश के ग़ैर-मुस्लिम लोगों पर ख़र्च करना और मुसीबत व परेशानी में उनके साथ हमदर्दी व मदद करना तो मुसलमानों का विशिष्ट गुण है । इस विशिष्ट गुण से प्रशंसित करने के लिए अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मुसलमानों के सामने नमूने के तौर पर अमल करके पेश किया, उसकी एक मिसाल हदीस में इस तरह है–"एक साल मक्का मुकर्रमा के लोग अकाल से घिर गये तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और सफ़वान बिन उमैया के पास पांच सौ दिरहम भेजा, ताकि वह मक्का के ज़रूरतमंदों और मुहताजों में बांट दें ।"

इस्लाम ने ग़ैर-मुस्लिम लोगों से कारोबार, व्यापार, लेन-देन और मामलों को ठीक रखा है । अत: हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ख़ैबर पर विजय प्राप्त करने के बाद इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन यहूद के साथ हमदर्दी का मामला किया है, इस तरह कि वे खेती करेंगे और पैदावार का आधा हिस्सा आप (सल्ल०) को अदा करेंगे । जब कटाई का समय आता, आप (सल्ल०) पैदावार का अंदाज़ा करने के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि०) को भेजते । (अबू दाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि०) पैदावार को दो हिस्सों में बांटकर फ़रमाते : जिस हिस्सा को चाहो ले लो ! यहूद इस न्याय को देखकर यह क़हते "ऐसे ही न्याय और इन्साफ़ से आसमान और ज़मीन क़ायम है ।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि०) उनसे यह फ़रमाते : ऐ यहूद के गिरोह ! सारी मख़्लूक़ में तुम मेरे निकट सबसे ज़्यादा अप्रिय हो, तुमने अल्लाह के नबियों को क़त्ल किया और तुमने अल्लाह पर लांछन लगाया, लेकिन तुम्हारी दुश्मनी मुझको इस बात पर उत्तेजित नहीं कर सकती कि मैं तुम पर किसी तरह का अत्याचार करूं ।"

(शरहुमआनी उस-सारिज, भाग-1, पृष्ठ-316)

इससे स्पष्ट है कि मुसलमान ग़ैर-मुस्लिमों के साथ कितने पवित्र तरीक़े से मामले करते आये हैं कि जुल्म-अत्याचार और हक़तलफ़ी का कोई लवलेश नहीं । इसी तरह मुसलमान ग़ैर-मुस्लिमों से लेन-देन का मामला भी कर सकते हैं । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "मोमिन वह है जिससे सारे लोगों के ख़ून और माल सुरक्षित हों ।"

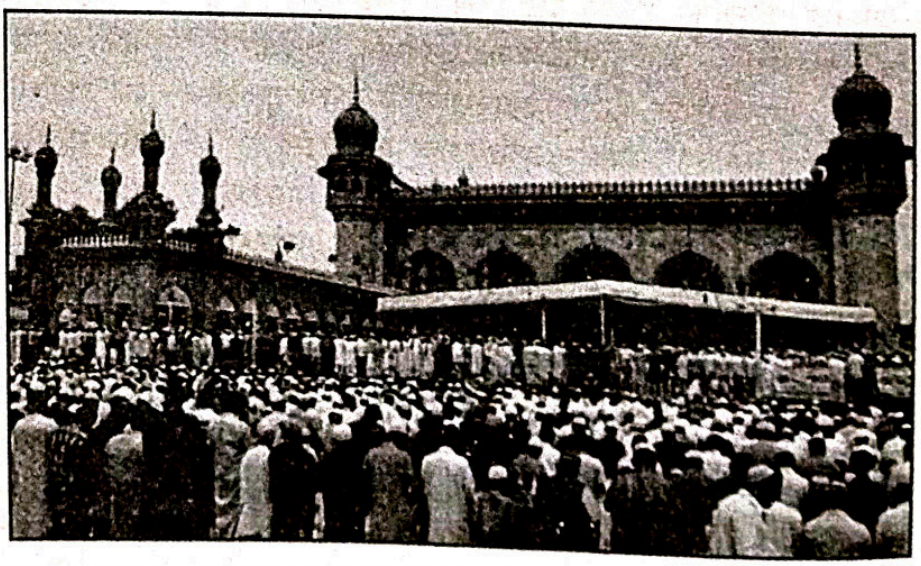

इस्लाम में जानवरों के अधिकार

■ प्रो॰ अब्दुल अज़ीम जांबाज़

इस्लाम ने जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं छोड़ा, जिसमें उसने अपने मानने वालों का मार्गदर्शन न किया हो । इस्लाम ने जहां इन्सानों से इन्सानियत, सद्व्यवहार और प्रेम-मुहब्बत से मिलकर रहने की शिक्षा दी, वहीं इस्लाम ने हमें जानवरों के अधिकारों से भी सचेत किया और हर जानदार के कुछ अधिकार निर्धारित किये गये हैं और मुसलमानों को यह आदेश मिला है कि वह जानवरों के अधिकारों को भी सुन्नते रसूल समझते हुए अदा करें । इस्लाम के अनुसार तुममें से बेहतरीन वह है, जो अल्लाह के स्रष्ट जीवों को ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाने वाला हो ।

अल्लाह तआला ने ज़मीन, आसमान और सारी चीज़ों को विशिष्ट उद्देश्य के साथ अस्तित्व प्रदान किया है । इन्सान को केवल अपनी इबादत व बन्दगी के लिए पैदा किया है और इन्सानों के फ़ायदे के लिए दुनिया और उसकी सारी चीज़ों को पैदा किया है और दुनिया को नाना प्रकार के जीव-जंतुओं से ख़ूब सजाया और संवारा है । तरह-तरह के पशु-पक्षी भी अल्लाह तआला ने ही पैदा किये हैं । ये पशु-पक्षी इन्सानों के लिए बहुत ही लाभप्रद हैं । इन सबसे हम इन्सानों की बहुत-सी ज़रूरतें पूरी होती हैं । कुछ जानवरों से हम वस्त्र-कपड़े (कम्बल, शाल, टोपी, ख़ेमे और डेरे) जूते-चप्पल और तरह-तरह के बहुत से चमड़े के सामान प्राप्त होते हैं । कुछ जानवर खेती-बारी और सवारी के काम आते हैं और कुछ से दूध-दही, घी, पनीर, गोश्त और बहुत-सी लाभदायक चीज़ें प्राप्त होती हैं ।

वास्तव में दुनिया में मौजूद बहुत-से जानवरों में हम इन्सानों के लिए लाभ ही लाभ है और हमें इनसे आराम ही आराम मिलता है । पवित्र क़ुरआन मजीद की असंख्य आयतों विशेष रूप से आले इमरान की आयत-14 सूरह अनआम : 142, सूरह नहल : 80, सूरह हज : 30 और इनके अलावा बहुत-सी आयतें जानवरों के बारे में मौजूद हैं । अल्लाह तआला फ़रमाता है–

''उसने जानवर पैदा किये जिनमें तुम्हारे लिए वस्त्र भी हैं और ख़ुराक भी, और तरह-तरह के दूसरे फ़ायदे भी । उनमें तुम्हारे लिए सौंदर्य है जबकि सुबह तुम उन्हें चरने के लिए भेजते हो और जबकि शाम उन्हें वापस लाते हो । वे तुम्हारे लिए बोझ ढोकर ऐसे-ऐसे स्थानों तक ले जाते हैं जहां तुम जान-तोड़ परिश्रम के बिना नहीं पहुंच सकते । वास्तव में तुम्हारा रब बड़ा ही करुणामय और दयावान है । उसने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और वे तुम्हारी ज़िन्दगी की शोभा बनें ।''

(क़ुरआन, 16:5-8)

अल्लाह तआला ने इन जानवरों को हम इन्सानों के लिए नियुक्त कर दिया है और हमें इन पर पूरा अधिकार प्रदान करने के साथ-साथ इन्हें हमारे अधीन कर दिया है । अत: अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में यह वास्तविकता बहुत-ही स्पष्ट शब्दों में फ़रमायी है–''क्या ये लोग देखते नहीं हैं कि हमने अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से इनके लिए चौपाए पैदा किये हैं और अब ये उनके मालिक हैं । हमने उन्हें इस तरह उनके बस में कर दिया है कि उनमें से किसी पर ये सवार होते हैं, किसी का ये गोश्त खाते हैं और उनके अन्दर इनके लिए तरह-तरह के लाभ और पीने की चीज़ें हैं । फिर क्या ये कृतज्ञ नहीं होते ?''

(क़ुरआन, 36:71-73)

दुनिया में मौजूद सारे जीव-जन्तु व जानवर अल्लाह तआला की मख़्लूक़ हैं । दुनिया में इनका अस्तित्व अल्लाह तआला की क़ुदरत व हिकमत का जीता-जागता सबूत है और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की रहमत और नेमत का प्रतीक है और हम इन्सानों के लिए लाभ, सुविधा और शोभा का कारण है ।

अल्लाह तआला ने अनेक मुख्य अवसरों पर इन बेज़ुबान जानवरों से बड़े-बड़े काम लिए हैं । हम इन्सानों को इन जानवरों के माध्यम से अहम कामों (विशेष रूप से दफ़न इत्यादि के तरीक़े) की शिक्षा दी है । वास्तव में ये जानवर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में हम इन्सानों के लिए ज़रूरी हैं । इसलिए इस्लाम ने जिस तरह इन्सानों की

तकलीफ़ को शरई अपराध ठहराया है, उसी तरह जानवरों की तकलीफ़ को भी धार्मिक गुनाह कहा है और इस्लाम में जिस तरह इन्सानों के साथ सद्व्यवहार करना सवाब का काम है, उसी तरह जानवरों, पशु-पक्षियों और चौपायों के साथ अच्छा व्यवहार करना बहुत ही सवाब का काम है ।

क़ुरआन व हदीस में इस सिलसिले में बहुत ही स्पष्ट शिक्षाएं और हिदायतें मौजूद हैं, अत: अल्लाह तआला ने इन सारे जानवरों को भी हम इन्सानों की ही तरह जमाअत व गिरोह ठहरा दिया है । अल्लाह तआला फ़रमाता है–"ज़मीन में चलने वाले किसी जानवर और हवा में पंख से उड़ने वाले किसी पक्षी को देख लो, ये सब तुम्हारी ही तरह की जातियां हैं, हमने उनके भाग्य के लेख में कोई कमी नहीं छोड़ी है, फिर ये सब अपने रब की ओर समेटे जाते हैं ।" (क़ुरआन, 6:38) इस आधार पर ये जानवर भी रहमोकरम और हमदर्दी व सहानुभूति के पात्र हैं ।

एक हदीस में है कि एक सहाबी ने कहा कि "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मैं बकरी ज़िबह करता हूं तो मुझे उस पर रहम आता है, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर तुम बकरी पर रहम करते हो, तो अल्लाह तआला तुम पर रहम करेगा ।" (मुस्नद अहमद) एक और हदीस में इन जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश बहुत ही प्रेरणादायक अंदाज़ में इस तरह दिया गया है कि "हर तर जिगर के साथ नेक सलूक करने में अज्र व सवाब है ।" (बुख़ारी) यही वजह है कि आप (सल्ल०) ने अज्ञानताकाल में जानवरों के साथ प्रचलित सारे ज़ालिमाना बर्ताव पर सख़्त चेतावनी दी और निर्दयता व बेरहमी के सारे तौर-तरीक़ों को बिल्कुल मिटा दिया । अत: आप (सल्ल०) ने जानवरों को बांधकर निशाना लगाने से मना किया है । (मुस्लिम, इब्ने माजा)

इस्लाम धर्म ने इन्सानी ज़रूरत पर जिन जानवरों को मारने या ज़िबह करने की इजाज़त दी है, उन जानवरों के साथ उस वक़्त भी पूरी नरमी व हमदर्दी करने का मिसाली हुक्म दिया है । अत: एक हदीस में है कि "अल्लाह तआला ने हर मख़्लूक़ के साथ अच्छे व्यवहार के साथ पेश आना फ़र्ज़ ठहराया है, इसलिए जब तुम किसी जानवर को मारो तो अच्छे तरीक़े से मारो और जब ज़िबह करो तो अच्छे तरीक़े से ज़िबह करो और तुममें से हर आदमी अपनी छुरी तेज़ कर ले और अपने ज़िबह को आराम पहुंचाए ।" (मुस्लिम, इब्ने माजा) इन बेज़ुबान जानवरों का दूसरा बड़ा हक़ यह है कि इनके चारे-पानी का पूरा ख़याल रखा जाए, हर वक़्त और हर जगह उनको खिलाया और पिलाया जाए । क़ुरआन और हदीस में इनको खिलाने-पिलाने की बड़ी ताकीद की गयी है । अत: अल्लाह तआला ने हम इन्सानों को सूरह ता०हा० में साफ़-साफ़ आदेश दिया है कि "खाओ और अपने जानवरों को भी चराओ ।" (20:54) एक हदीस में इस तरह है कि "हर ज़िंदा जानवर के खिलाने-पिलाने में अज्र व सवाब है ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"जो कोई मुसलमान किसी पेड़ का पौधा लगाए या खेती करे, फिर कोई इन्सान या कोई पक्षी या चौपाया उस पेड़ या खेती में खाए, तो यह उस मुसलमान के लिए बड़े सवाब का काम है ।" (बुख़ारी, मुस्लिम) एक हदीस में आप (सल्ल०) ने एक ऊंट की तरफ़ से अपने मालिक की शिकायत करने पर उसके अंसारी मालिक को सख़्त चेतावनी दी और उसे अल्लाह तआला के अज़ाब से सचेत करते हुए इरशाद फ़रमाया–"इस बेज़ुबान जानवर के बारे में तुम अल्लाह तआला से क्यों नहीं डरते, जिसने तुमको इसका मालिक बनाया है, इस ऊंट ने मुझसे शिकायत की कि तुम इसको भूखा रखते हो और ताक़त से ज़्यादा काम लेकर इसको दु:ख पहुंचाते हो ।" (अबू दाऊद)

सच्चाई यह कि दुनिया में हर जगह और हर ज़माने में इन बेज़ुबान जानवरों के साथ बड़ी ज़्यादतियां और दुर्व्यवहार किये जा रहे हैं । इस्लाम की इन स्पष्ट शिक्षाओं और हिदायतों के बावजूद जानवरों का हक़ मारना आम बात है । इनके साथ अत्याचारिक व्यवहार जारी है । जो धर्म अपने अनुयायियों को जानवरों का इतना ख़याल रखने का आदेश देता हो, वह धर्म इन्सानों की गरदने काटने की कब इजाज़त देता होगा । ज़रूरत इस बात की है कि इस्लाम के इन शाश्वत संदेशों को आम किया जाए और दुनिया को इस्लाम का सही रूप दिखाया जाए, ताकि पूरी दुनिया में वास्तविक अमन व शान्ति स्थापित हो और एक ही घाट से इन्सान, शेर व बकरी पानी पीयें ।

"जब ज़मीन अपनी पूरी शिद्दत के साथ हिला डाली जाएगी, और ज़मीन अपने अन्दर के सारे बोझ निकालकर बाहर डाल देगी, और इन्सान कहेगा कि यह इसको क्या हो रहा है ? उस दिन वह अपने (ऊपर बीते हुए) हालात बयान करेगी, क्योंकि तेरे रब ने उसे (ऐसा करने का) आदेश दिया होगा ।"

(क़ुरआन, 99:1-5)

A Well Wisher

KOLKATA

"ऐ नबी, हमने तुमको गवाही देने वाला, ख़ुशख़बरी देने वाला और सावधान कर देने वाला बनाकर भेजा है ताकि ऐ लोगो, तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसका (अर्थात् रसूल का) साथ दो, उसका आदर व सम्मान करो और सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह (गुणगान) करते रहो।"

(क़ुरआन, 48:8-9)

A Well Wisher

KOLKATA

तलाक़ और नारी स्वतंत्रता

● संपादन प्रभाग

पिछले कई दशकों में दूसरे समुदायों में तलाक़ के प्रावधान को समाविष्ट किये जाने से यह सत्य अब पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि इस्लाम में तलाक़ के प्रावधान के विरुद्ध समस्त प्रचार भ्रामक एवं ग़लतफ़हमियों पर आधारित था । साथ ही यह बात भी स्पष्ट हो गयी है कि इस्लाम में तलाक़ का प्रावधान समाज और परिवार की आवश्यकता के अनुरूप है न कि उसके विरुद्ध । इस प्रावधान की वास्तविकता को समझने के लिए इस्लाम में विवाह के प्रावधान को समझना आवश्यक है ।

इस्लाम विवाह को मात्र काम-वासना की पूर्ति के माध्यम के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे समाज की स्थिरता एवं सुदृढ़ता के एक माध्यम के रूप में लेता है और उससे निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति करता है–

(क) परिवार की स्थापना–जो समाज का एक मौलिक अंश है ।

(ख) संतान के पालन-पोषण का एक केन्द्र स्थापित करना ।

(ग) समाज के विस्तार में सहायक होना ।

(घ) काम-वासना की पूर्ति का क़ानूनी प्रावधान प्रदान करना ।

इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस्लाम जब पति और पत्नी को विवाह के माध्यम से जोड़ता है, तो इस संबंध को एक ''अनुबंध'' की शक्ल देता है और ये अनुबंध तब ही तक प्रभावी रहता है जब तक इन उद्देश्यों की पूर्ति संभव हो ।

यदि पति-पत्नी में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए कि इन उद्देश्यों की पूर्ति संभव न हो तो इस्लाम, समाज की स्थिरता एवं सुदृढ़ता को ध्यान में रखते हुए, पति-पत्नी को ये अनुमति देता है कि वो पुराने अनुबंध को तोड़ कर ऐसे नये अनुबंध स्थापित कर लें, जहां इन उद्देश्यों की पूर्ति सुन्दर रूप से हो सके ।

इस दृष्टि से देखा जाए तो इस्लाम में तलाक़ का प्रावधान नारी पर अत्याचार और दासता का बोधक नहीं, बल्कि उसकी स्वतंत्रता का उद्घोषक है ।

''औरतों के लिए भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं, जैसे मर्दों के अधिकार उन पर हैं ।''

(क़ुरआन, 2:228)

इस सत्य को और भी अच्छी तरह समझा जा सकता है, यदि हम इसे अन्य धर्मों में तलाक़ के प्रावधान की पृष्ठभूमि में देखें–

(क) सन 1857 से पूर्व पश्चिमी समाज में तलाक़ का कोई प्रावधान नहीं था । एक बार विवाहित संबंध में जुड़ जाने के उपरांत उनके लिए मृत्यु के सिवा अलग होने का कोई रास्ता नहीं था, चाहे पारिवारिक जीवन पूर्ण रूप से नरक बन चुका हो और समाज को लाभ के बदले हानि पहुंचा रहा हो ।

(ख) भारतीय धर्मों में भी तलाक़ का कोई प्रावधान नहीं है और पत्नी की ''डोली के बाद उसकी अर्थी ही निकलेगी'' की धारणा आज भी मान्य है । सन 1955 के हिन्दू विवाह क़ानून संसोधन ने भारतीय संविधान में तलाक़ का प्रावधान सम्मिलित किया और पत्नी को ये आज़ादी दी की वह अपनी मृत्यु से पूर्व भी, यदि आवश्यक हो तो, परिवार से निकल सकती है । इस प्रकार यह सत्य प्रमाणित हो जाता है कि इस्लाम में 1400 वर्ष पूर्व दिया गया तलाक़ का प्रावधान औरत के लिए अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है।

तलाक़ कोई खेल नहीं है

यह सत्य है कि तलाक़ से एक परिवार टूट जाता है । परन्तु ईश्वर ने इसकी अनुमति मात्र इसलिए दी है कि पति और पत्नी अपने लिए एक नये परिवार की स्थापना कर सकें और समाज की उन्नति में सकारात्मक भूमिका निभा सकें और उनकी योग्यता, क्षमता और सामर्थ्य एक असफल परिवार के कारण नष्ट न हो जाए ।

परन्तु इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने

यह भी स्पष्ट कर दिया है कि हलाल कामों में सबसे अधिक नापसन्दीदा काम तलाक़ है ।

"अल्लाह के नज़दीक हलाल चीज़ों में सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा चीज़ तलाक़ है ।" (हदीस)

तलाक़ : अन्तिम समाधान

तलाक़ के इस प्रावधान को अन्तिम और अपरिहार्य समाधान के रूप में ही उपयोग किया जा सकता है । यदि पति-पत्नी के बीच ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए कि परिवार को चलाना मुश्किल हो रहा हो, तो इस्लाम तलाक़ की स्थिति आने से पहले पति-पत्नी के बीच सुलह-सफ़ाई कराने का भरपूर प्रयत्न करता है ।

(क) इस्लाम उनके सामने ये सत्य रखता है कि, "हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और वही तुम्हारे लिए अच्छी हो । और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द हो और वही तुम्हारे लिए बुरी हो ! अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते ।" (कुरआन, 2:216)

(ख) तलाक़ में पूर्ण संबंध-विच्छेद से पूर्व इस्लाम उन्हें "इद्दत" की अवधि तक साथ रहने की आज्ञा देता है कि यदि वो इस अवधि में अपनी ग़लती को महसूस कर लें तो विवाह को पूर्णत: टूटने से बचा लें ।

(ग) तलाक़ की स्थिति आने से पूर्व इस्लाम आदेश देता है कि दोनों ओर के परिवार वाले विवाह को टूटने से बचाने का पूरा प्रयत्न करें । ऐसी मध्यस्थता पर ईश्वर ने उनकी सहायता का विश्वास दिलाया है ।

(घ) इन सारे प्रयत्नों के असफल हो जाने पर ही इस्लाम तलाक़ की अनुमति देता है ।

परेशानियों का समाधान

तलाक़ का विरोध करने वालों का सबसे बड़ा तर्क यही है कि तलाक़ के बाद औरत की स्थिति अति दयनीय हो जाती है, समाज उसे बुरी निगाह से देखता है और उसका कोई सहारा नहीं होता । यह तर्क लोगों में औरत के प्रति सहानुभूति एवं भावुकता तो उत्पन्न कर सकता है, परन्तु उसको एक असफल वैवाहिक जीवन के कष्टों से छुटकारा नहीं दिला सकता ।

इस्लाम एक संपूर्ण जीवन व्यवस्था है और इसमें औरत को इस दयनीय स्थिति से बचाने का प्रावधान तलाक़ की अनुमति देने से पूर्व ही कर दिया गया है–

(क) तलाक़ के उपरांत एक स्त्री दूसरा विवाह करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र है, उसे इससे रोकने का अधिकार किसी को भी नहीं है । यह इस्लाम की विशेषता है जो अन्य धर्मों में नहीं पायी जाती ।

(ख) तलाक़ के बाद एक औरत दर-दर की ठोकरें नहीं खाती । वो अपने मायके वापस चली जाती है और उसके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी उनकी होती है ।

(ग) दाम्पत्य जीवन में पति उपहार के रूप में जो कुछ भी पत्नी को देता है, चाहे वो धन हो, गहने हों, कोई अन्य सामग्री हो या घर हो, वो पत्नी की संपत्ति होती है और तलाक़ के पूर्व अथवा उपरांत उसे वापस नहीं किया जा सकता ।

(घ) इस्लामी विरासत का क़ानून एक स्त्री को उसके माता-पिता, भाई-बहन एवं अन्य रिश्तेदारों की धन-संपत्ति से एक निश्चित हिस्सा दिलाता है, जो कुरआन में सविस्तार निर्धारित कर दिया गया है । यह हिस्सा उसका अधिकार है और उसे कोई भी इससे वंचित नहीं कर सकता ।

(ड़) इस्लाम ने एक से अधिक पत्नी की अनुमति देकर समाज में स्त्री के अविवाहित (तलाक़ के उपरांत भी) रह जाने को बहुत हद तक समाप्त कर दिया है ।

ये तो सत्य है कि तलाक़ से एक स्त्री को कठोर मानसिक आघात लगता है और उसके जीवन की गाड़ी पटरी से उतर जाती है, परन्तु इस्लाम के इन प्रावधानों से वह शीघ्र ही उन पर क़ाबू पा सकती है और अपनी जीवन रूपी गाड़ी को पुन: पटरी पर डाल सकती हैं और समाज के निर्माण में अपनी पूरी भूमिका निभा सकती है ।

जिस प्रकार शरीर के स्वास्थ्य के लिए कभी-कभी उसका ऑपरेशन आवश्यक हो जाता है और जिसे किसी भी प्रकार से मरीज़ पर अत्याचार नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार समाज के स्वास्थ्य के लिए भी कभी-कभी परिवार का ऑपरेशन आवश्यक हो जाता है और इसे किसी भी प्रकार से स्त्री पर अत्याचार या शोषण के रूप में नहीं लिया जा सकता । समाज ने इसकी आवश्यकता हमेशा महसूस की है और जिन धर्मों में इसका प्रावधान नहीं था, उन्होंने भी किसी न किसी रूप में इसे अपने यहां सम्मिलित कर लिया है ।

टोबा टेकसिंह

■ सआदत हसन मंटो

बंटवारे के दो-तीन साल बाद पाकिस्तान और हिंदुस्तान की हुकूमतों को ख़याल आया कि अख़्लाक़ी क़ैदियों की तरह पागलों का भी तबादला होना चाहिए, यानी जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलख़ानों में हैं उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया जाए और जो हिन्दू और सिख पाकिस्तान के पागलख़ानों में है उन्हें हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाए ।

मालूम नहीं यह बात माक़ूल थी या ग़ैर-माक़ूल थी । बहरहाल, दानिशमंदों के फ़ैसले के मुताबिक़ इधर-उधर ऊंची सतह की कान्फ्रेंसें हुई और आख़िर एक दिन पागलों के तबादले के लिए मुक़र्रर हो गया । अच्छी तरह छानबीन की गयी । वो मुसलमान पागल जिनके लवाहिकीन (संबंधी) हिन्दुस्तान ही में थे वहीं रहने दिये गये थे । बाक़ी जो थे उनको सरहद पर रवाना कर दिया गया । यहां पाकिस्तान में चूंकि क़रीब-क़रीब तमाम हिन्दू सिख जा चुके थे इसलिए किसी को रखने-रखाने का सवाल ही न पैदा हुआ । जितने हिन्दू-सिख पागल थे सबके सब पुलिस की हिफ़ाज़त में सरहद पर पहुंचा दिये गये ।

उधर का मालूम नहीं । लेकिन इधर लाहौर के पागलख़ानों में जब इस तबादले की ख़बर पहुंची तो बड़ी दिलचस्प चेमेगोइयां होने लगी । एक मुसलमान पागल जो बारह बरस से हर रोज़ बाक़ायदगी के साथ ज़मींदार (एक अख़बार का नाम) पढ़ता था, उससे जब उसके एक दोस्त ने पूछा–

-मोल्ही साब । ये पाकिस्तान क्या होता है ?

तो उसने बड़े ग़ौरो-फ़िक्र के बाद जवाब दिया–

-हिन्दुस्तान में एक ऐसी जगह है जहां उस्तरे बनते हैं।

ये जवाब सुनकर उसका दोस्त मुतमइन हो गया ।

इसी तरह एक और सिख पागल ने एक दूसरे सिख पागल से पूछा–

-सरदार जी हमें हिन्दुस्तान क्यों भेजा जा रहा है–हमें तो वहां की बोली नहीं आती ।

दूसरा मुस्कराया–

-मुझे तो हिन्दुस्तान की बोली आती है-हिंदुस्तानी बड़े शैतानी अकड़-अकड़ फिरते हैं ।

एक मुसलमान पागल ने नहाते-नहाते 'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद' का नारा इस ज़ोर से बुलन्द किया कि फ़र्श पर फिसल कर गिरा और बेहोश हो गया ।

कई पागल ऐसे थे जो पागल नहीं थे । उनमें अकसरियत ऐसे क़ातिलों की थी जिनके रिश्तेदारों ने अफ़सरों को दे-दिलाकर पागलखाने भिजवा दिया था कि फांसी के फंदे से बच जाएं । ये कुछ-कुछ समझते थे कि हिंदुस्तान क्या तक़सीम हुआ और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सही हालात से ये भी बेख़बर थे । अख़बारों से कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ़ और जाहिल थे । उनकी गुफ़तगू (बातचीत) से भी वो कोई नतीजा बरामद नहीं कर सकते थे । उनको सिर्फ़ इतना मालूम था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है, जिसको क़ायदे आज़म कहते हैं । उसने मुसलमानों के लिए एक अलग मुल्क बनाया है जिसका नाम पाकिस्तान है । यह कहां है ? इसके मुताल्लिक़ वह कुछ नहीं जानते थे । यही वजह है कि पागलख़ाने में वो सब पागल जिनका दिमाग़ पूरी तरह माउफ़ नहीं हुआ था, इस मख़मसे में गिरफ़्तार थे कि वो पाकिस्तान में हैं या हिन्दुस्तान में । अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहां है । अगर वो पाकिस्तान में है तो ये कैसे हो सकता है कि वो कुछ अरसा पहले यहां रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे । एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में कुछ ऐसा गिरफ़्तार हुआ कि और ज़्यादा पागल हो गया । झाड़ू देते-देते एक दिन दरख़्त पर चढ़ गया और टहनी पर बैठकर दो घंटे मुस्तकिल तक़रीर करता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाज़ुक मसले पर थी । सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने को कहा तो वो और ऊपर चढ़ गया । डराया, धमकाया गया तो उसने कहा–

-मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूं न पाकिस्तान में । मैं इस दरख़्त पर ही रहूंगा ।

एक एम॰एस॰सी॰ पास रेडियो इंजीनियर में, जो मुसलमान था और दूसरे पागलों से बिल्कुल अलग-थलग, बाग़ की एक ख़ास रविश (क्यारी) पर सारा दिन ख़ामोश टहलता रहता था, यह तब्दीली नमूदार हुई कि उसने तमाम कपड़े उतारकर दफ़ादार के हवाले कर दिये और नंगधड़ंग सारे बाग़ में चलना शुरू कर दिया ।

यन्यूट के एक मोटे मुसलमान पागल ने, जो मुस्लिम लीग का एक सरगर्म कारकुन था और दिन में पन्द्रह-सोलह मरतबा नहाता था, यकलख़्त (एकदम) यह आदत तर्क (छोड़) कर दी । उसका नाम मुहम्मद अली था । चुनांचे उसने एक दिन अपने जिंगले में ऐलान कर दिया कि वह क़ायदे आज़म मुहम्मद अली जिन्ना है । उसकी देखा-देखी एक सिख पागल मास्टर तारा सिंह बन गया । क़रीब था कि उस जिंगले में ख़ून-ख़राबा हो जाए, मगर दोनों को ख़तरनाक पागल क़रार देकर अलग-अलग बन्द कर दिया गया ।

लाहौर का एक नवजवान हिन्दू वकील था जो मुहब्बत में मुब्तिला होकर पागल हो गया था । जब उसने सुना कि अमृतसर हिन्दुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुख हुआ । इसी शहर की एक हिन्दू लड़की से उसे मुहब्बत हो गयी थी । गो उसने इस वकील को ठुकरा दिया था, मगर दीवानगी की हालत में भी वह उसको नहीं भूला था । चुनांचे वह उन तमाम मुस्लिम लीडरों को गालियां देता था, जिन्होंने मिल-मिलाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिये-उसकी महबूबा हिंदुस्तानी बन गयी और वह पाकिस्तानी ।

जब तबादले की बात शुरू हुई तो वकील को कई पागलों ने समझाया कि वह दिल बुरा न करे, उसको हिन्दुस्तान वापस भेज दिया जाएगा । उस हिन्दुस्तान में जहां उसकी महबूबा रहती है । मगर वह लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था-इस ख़याल से कि अमृतसर में उसकी प्रैक्टिस नहीं चलेगी ।

यूरोपियन वार्ड में दो एंग्लो-इंडियन पागल थे । उनको जब मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान को आज़ाद करके अंग्रेज़ चले गये हैं तो उनको बहुत रंज हुआ । वह छुप-छुपकर इस मसले पर गुफ़्तगू करते रहते कि पागलख़ाने में उनकी हैसियत क्या होगी । यूरोपियन वार्ड रहेगा या उड़ जाएगा । ब्रेकफास्ट मिलेगा या नहीं । क्या उन्हें डबलरोटी के बजाय ब्लडी इंडियन चपाती तो ज़हरमार नहीं करनी पड़ेगी ?

एक सिख था जिसको पागलख़ाने में दाख़िल हुए पन्द्रह बरस हो चुके थे । हर वक़्त उसकी ज़बान पर अजीबोग़रीब अल्फ़ाज़ सुनने में आते थे, 'ओपड़ी गुड़गुड़ दी एन्क्स दी बेध्याना विमंग दी बाल ऑफ़ दी लालटेन ।' वो न दिन में सोता था न रात में । पहरेदारों का कहना था कि पन्द्रह बरस के तवील अर्से में वह एक लम्हे के लिए भी नहीं सोया । लेटा भी नहीं था । अलबत्ता किसी दीवार के साथ टेक लगा लेता था ।

हर वक़्त खड़ा रहने से उसके पांव सूज गये थे । पिंडलियां भी फूल गयीं थीं । मगर इस जिस्मानी तकलीफ़ के बावजूद वह लेटकर आराम नहीं करता था । हिन्दुस्तान-पाकिस्तान और पागलों के तबादले के मुताल्लिक़ जब कभी पागलख़ाने में गुफ़्तगू होती थी तो वह ग़ौर से सुनता था । कोई उससे पूछता कि उसका क्या ख़याल है तो बड़ी संजीदगी से जवाब देता, 'ओपड़ी गुड़गुड़ दी एन्क्स दी बेध्याना विमंग दी वाल ऑफ़ दी पाकिस्तान गवर्नमेंट ।'

लेकिन बाद में ऑफ़ दी पाकिस्तान गवर्नमेंट की जगह ऑफ़ दी टोबा टेकसिंह गवर्नमेंट ने ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेक सिंह कहां है जहां का वो रहने वाला है । लेकिन किसी को भी नहीं मालूम था कि वो पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में । जो यह बताने की कोशिश करते थे वो खुद इस उलझाव में गिरफ़्तार हो जाते थे कि सियालकोट पहले हिन्दुस्तान में होता था, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है । क्या पता है कि लाहौर जो अब पाकिस्तान में है कल हिन्दुस्तान में चला जाएगा या सारा हिन्दुस्तान ही पाकिस्तान बन जाएगा । और यह भी कौन सीने पर हाथ रखकर कह सकता था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों किसी दिन सिरे से ग़ायब नहीं हो जाएंगे ।

उस सिख पागल के केस छिदरे होके बहुत मुख़्तसर रह गये थे । चूंकि वह बहुत कम नहाता था इसलिए दाढ़ी और बाल आपस में जम गये थे जिनके बाइस (कारण) उसकी शक्ल बड़ी भयानक हो गयी थी । मगर आदमी बेज़रर (अहानिकारक) था । पन्द्रह बरसों में उसने किसी से झगड़ा-फ़साद नहीं किया था । पागलख़ाने के जो पुराने मुलाज़िम थे वो उसके मुताल्लिक़ इतना जानते थे कि टोबा टेक सिंह में उसकी कई ज़मीनें थीं । अच्छा खाता-पीता

ज़मींदार था कि अचानक दिमाग़ उलट गया । उसके रिश्तेदार लोहे की मोटी-मोटी ज़ंजीरों में उसे बांधकर लाए और पागलख़ाने में दाख़िल करा गये ।

महीने में एक बार मुलाक़ात के लिए ये लोग आते थे और उसकी ख़ैर-ख़ैरियत दरयाफ़्त करके चले जाते थे । एक मुद्दत तक ये सिलसिला जारी रहा, पर जब पाकिस्तान हिन्दुस्तान की गड़बड़ शुरू हुई तो उनका आना बन्द हो गया ।

उसका नाम बिशन सिंह था । मगर सब उसे टोबा टेकसिंह कहते थे । उसको ये मालूम नहीं था कि दिन कौन-सा है, महीना कौन-सा है या कितने दिन बीत चुके हैं । लेकिन हर महीने जब उसके अज़ीज़ व अक़ारिब (सगे-संबंधी) उससे मिलने के लिए आते तो उसे अपने आप पता चल जाता था । चुनांचे वो दफ़ादार से कहता कि उसकी मुलाक़ात आ रही है । उस दिन वह अच्छी तरह नहाता, बदन पर ख़ूब साबुन घिसता और सिर में तेल लगाकर कंघा करता । अपने कपड़े जो वह कभी इस्तेमाल नहीं करता था, निकलवा के पहनता और यूं सज-बनकर मिलने वालों के पास आता । वो उससे कुछ पूछते तो वह ख़ामोश रहता या कभी-कभार 'ओपड़ी गुड़गुड़ दी एंक्स दी वेध्याना विमंग दी वाल ऑफ़ दी लालटेन' कह देता । उसकी एक लड़की थी जो हर महीने एक उंगली बढ़ती-बढ़ती पन्द्रह बरसों में जवान हो गयी थी । बिशन सिंह उसको पहचानता ही नहीं था । वह बच्ची थी जब भी आपने बाप को देखकर रोती थी, जवान हुई तब भी उसकी आंख में आंसू बहते थे । पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का क़िस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहां है । जब इत्मीनान बख़्श (संतोषजनक) जवाब न मिला तो उसकी कुरेद दिन-ब-दिन बढ़ती गयी । अब मुलाक़ात नहीं आती है । पहले तो उसे अपने आप पता चल जाता था कि मिलने वाले आ रहे हैं, पर अब जैसे उसके दिल की आवाज़ भी बन्द हो गयी थी जो उसे उनकी आमद की ख़बर दे दिया करती थी ।

उसकी बड़ी ख़्वाहिश थी कि वो लोग आएं जो उससे हमदर्दी का इज़हार करते थे और उसके लिए फल, मिठाइयां और कपड़े लाते थे । वो उनसे अगर पूछता कि टोबा टेकसिंह कहां है तो यक़ीनन वो उसे बता देते कि पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, क्योंकि उसका ख़याल था कि वो टोबा टेकसिंह ही से आते हैं जहां उसकी ज़मीनें हैं ।

पागलख़ाने में एक पागल ऐसा भी था जो ख़ुद को ख़ुदा कहता था । उससे जब एक दिन बिशन सिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में तो उसने हस्बेआदत (आदत के अनुसार) क़हक़हा लगाया और कहा–

-वो न पाकिस्तान में है न हिन्दुस्तान में, इसलिए कि हमने अभी तक हुक्म नहीं लगाया ।

बिशन सिंह ने इस ख़ुदा से कई मरतबा बड़ी मिन्नत समाजत से कहा कि वो हुक्म दे दे ताकि झंझट ख़त्म हो, मगर वो बहुत मसरूफ़ था, इसलिए कि उसे और बेशुमार हुक्म देने थे । एक दिन तंग आकर वह उस पर बरस पड़ा, 'ओपड़ी गुड़गुड़ दी एंक्स दी बेध्याना विमंग दी वाल ऑफ़ वाहे गुरुजी दा खलसा एंड वाहे गुरुजी की फ़तह । जो बोले सो निहाल सत सिरी अकाल ।' उसका शायद यह मतलब था कि तुम मुसलमान के ख़ुदा हो, सिखों के ख़ुदा होते तो ज़रूर मेरी सुनते । तबादले से कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान दोस्त मुलाक़ात के लिए आया । पहले वह कभी नहीं आया था । जब बिशन सिंह ने उसे देखा तो एक तरफ़ हट गया और वापस आने लगा मगर सिपाहियों ने उसे रोका-ये तुमसे मिलने आया है-तुम्हारा दोस्त फ़ज़लदीन है ।

बिशन सिंह ने फ़ज़लदीन को देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा । फ़ज़लदीन ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रखा ।

-मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुमसे मिलूं लेकिन फ़ुरसत ही न मिली । तुम्हारे सब आदमी ख़ैरियत से चले गये थे मुझसे जितनी मदद हो सकी मैंने की । तुम्हारी बेटी रूप कौर...। वह कुछ कहते-कहते रुक गया । बिशन सिंह कुछ याद करने लगा–

-बेटी रूप कौर ।

-फ़ज़लदीन ने रुक कर कहा–

-हां वह भी ठीक-ठाक है । उनके साथ ही चली गयी थी ।

बिशन सिंह ख़ामोश रहा । फ़ज़लदीन ने कहना शुरू किया–

-उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी ख़ैर-ख़ैरियत पूछता

रहूं । अब मैंने सुना है कि तुम हिन्दुस्तान जा रहे हो । भाई बलबीर सिंह और भाई विधावा सिंह से सलाम कहना–और बहन अमृत कौर से भी । भाई बलबीर से कहना फ़ज़लदीन राज़ी-ख़ुशी है । वो भूरी भैंसे जो वो छोड़ गये थे उनमें से एक ने कट्टा दिया है दूसरी के कट्टी हुई थी पर वो छह दिन की हो के मर गयी और मेरे लायक़ जो ख़िदमत हो कहना, मैं हर वक़्त तैयार हूं और ये तुम्हारे लिए थोड़े से मरूंडे लाया हूं ।

बिशन सिंह ने मरूंडे की पोटली लेकर पास खड़े सिपाही के हवाले कर दी और फ़ज़लदीन से पूछा–टोबा टेकसिंह कहां है ?

-टोबा टेकसिंह...उसने क़द्रे-हैरत से कहा–कहां है ! वहीं है, जहां था ।

बिशन सिंह ने पूछा–पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ?

-हिन्दुस्तान में...। नहीं-नहीं पाकिस्तान में...।

फ़ज़लदीन बौखला-सा गया । बिशन सिंह बड़बड़ाता हुआ चला गया–ओपड़ी गुड़गुड़ दी एंक्स दी बेध्याना विमंग दी वाल ऑफ़ दी पाकिस्तान एंड हिन्दुस्तान ऑफ़ दी हए फिटे मुंह ।

तबादले की तैयारियां मुकम्मल हो चुकी थीं । इधर से उधर और उधर से इधर आने वाले पागलों की फ़ेहरिस्तें (सूचियां) पहुंच गयी थीं, तबादले का दिन भी मुक़र्रर हो गया था । सख़्त सर्दियां थीं । जब लाहौर के पागलख़ाने से हिन्दू-सिख पागलों से भरी हुई लारियां पुलिस के मुहाफ़िज़ दस्ते के साथ रवाना हुई तो मुतल्लिक़ा (संबंधित) अफ़सर भी हमराह थे । वाघा के बार्डर पर तरफ़ैन के (दोनों तरफ़ से) सुपरिटेंडेंट एक दूसरे से मिले और इब्तिदाई कार्रवाई ख़त्म होने के बाद तबादला शुरू हो गया जो रात भर जारी रहा ।

पागलों को लारियों से निकालना और उनको दूसरे अफ़सरों के हवाले करना बड़ा कठिन काम था । बाज़ तो बाहर निकलते ही नहीं थे । जो निकलने पर रज़ामन्द होते थे, उनको संभालना मुश्किल हो जाता था क्योंकि इधर-उधर भाग उठते थे । जो नंगे थे उनको कपड़े पहनाए जाते, तो वो फाड़कर अपने तन से जुदा कर देते कोई गालियां बक रहा है, कोई गा रहा है । आपस में लड़-झगड़ रहे हैं, रो रहे हैं, बक रहे हैं । कान पड़ी आवाज़ सुनायी नहीं देती थी–पागल औरतों का शोरोग़ोग़ा अलग था और सर्दी इतने कड़ाके की थी कि दांत बज रहे थे ।

पागलों की अकसरियत इस तबादले के हक़ में नहीं थी । इसलिए कि उनकी समझ में आता था कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़कर कहां फेंका जा रहा है । चन्द जो कुछ सोच रहे थे–'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे । दो-तीन मरतबा फ़साद होते-होते बचा, क्योंकि बाज़ मुसलमान और सिखों को ये नारे सुनकर तैश आ गया ।

जब बिशन सिंह की बारी आयी और वाघा के उस पार मुतल्लिक़ा अफ़सर उसका नाम रजिस्टर में दर्ज करने लगा तो उसने पूछा–टोबा टेकसिंह कहां है ? पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ? मुतल्लिक़ा अफ़सर हंसा-पाकिस्तान में ।

यह सुनकर विशन सिंह उछलकर एक तरफ़ हटा और दौड़कर अपने बाक़ी मांदा साथियों के पास पहुंच गया । पाकिस्तानी सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और दूसरी तरफ़ ले जाने लगे । मगर उसने चलने से इन्कार कर दिया, और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा–टोबा टेकसिंह कहां है ओपड़ी गुड़गुड़ दी एंक्स दी बेध्याना विमंग दी वाल ऑफ़ दी टोबा टेकसिंह एंड पाकिस्तान ।

उसे बहुत समझाया गया कि देखो अब टोबा टेकसिंह हिन्दुस्तान में चला गया है । अगर नहीं गया तो उसे फ़ौरन वहां भेज दिया जाएगा । मगर वो न माना । जब उसको ज़बरदस्ती दूसरी तरफ़ ले जाने की कोशिश की गयी तो वह दर्मियान में एक जगह इस अन्दाज़ में अपनी सूजी हुई टांगों पर खड़ा हो गया जैसे अब उसे वहां से कोई ताक़त नहीं हटा सकेगी ।

आदमी चूंकि बेज़रर था इसलिए उससे मज़ीद ज़बरदस्ती न की गयी । उसको वहीं खड़ा रहने दिया गया और बाक़ी काम होता रहा । सूरज निकलने से पहले साकित व साकिन (शांत) बिशन सिंह हलक से एक फ़लक शगाफ़ (आसमान को फाड़ देने वाली) चीख़ निकली–इधर-उधर से कई अफ़सर दौड़ आये और देखा कि वो आदमी जो पन्द्रह बरस तक दिन-रात अपनी टांगों पर खड़ा रहा, औंधे मुंह लेटा था । उधर खारदार तारों के पीछे हिन्दुस्तान था–इधर वैसे ही तारों के पीछे पाकिस्तान । दर्मियान में ज़मीन के इस टुकड़े पर, जिसका कोई नाम नहीं था, टोबा टेकसिंह पड़ा था ।

स्वच्छता एवं पवित्रता

● संपादन प्रभाग

हमें और पूरे जगत को खुदा ने पैदा किया है और उसने हम इन्सानों को सर्वश्रेष्ठ प्राणी (अशरफुल-मख़लूक़ात) बनाया है । खुदा ने अपनी योजना के तहत एक सीमित समय के लिए इन्सानों को धरती पर भेजा है । इन्सान के अन्दर वे सभी ताक़तें और सलाहियतें रखी गयी हैं, जो उस योजना और मक़सद को पूरा करने के लिए ज़रूरी हैं । खुदा ने हमारी हर ज़रूरत का सामान दुनिया में उपलब्ध किया है ।

इन्सान को इस दुनिया में भेजे जाने का उद्देश्य वास्तव में यह है कि वह अपने पैदा करने वाले खुदा के मार्गदर्शन के तहत अपनी आत्मा को शुद्ध और विकसित करे । उसके अन्दर वे गुण पैदा करे जो खुदा को पसन्द हैं और जिनको पैदा करने और परवान चढ़ाने का उसने आदेश दिया है । जैसे कि वह अपने स्रष्टा (खुदा) को जाने, उससे उसका संबंध किस प्रकार का हो इसको समझे । उसके प्रति समर्पण और भक्ति की भावना, समस्त प्राणियों के प्रति दयाभाव, हमदर्दी, क्षमाशीलता, सेवाभाव, प्रेमभाव आदि पैदा करे । वह खुदा के साथ किसी को शरीक न करे । खुदा की नाफ़रमानी से बचे । धोखा-फ़रेब, झूठ, कंजूसी, ज़ुल्म व ज़्यादती और अन्य गन्दे कामों से दूर रहे ।

शरीर की पवित्रता भी आवश्यक है

इन्सान की रूह को एक शरीर भी दिया गया है और इस शरीर की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहुत-सी माद्दी और भौतिक चीज़ें प्रदान की गयी हैं । इस शरीर के संबंध में बहुत से आदेश दिये गये हैं उनमें से एक आदेश यह भी है कि शरीर और इससे संबंधित अन्य चीज़ों को पवित्र और पाक-साफ़ रखा जाए । इस्लाम चाहता है कि इन्सान का शरीर रूपी बर्तन भी पाक-साफ़ हो, और वह चीज़ भी पाक-साफ़ हो जो बर्तन के अन्दर है, यानी रूह या आत्मा ।

सफ़ाई-सुथराई और स्वच्छता व पवित्रता का प्रभाव इन्सान के दिल और दिमाग़ पर तो पड़ता ही है, इन्सान और इन्सानी समाज की सेहत की बेहतरी का भी इससे बड़ा गहरा संबंध है । सफ़ाई-सुथराई को हर इन्सान फ़ितरी तौर पर पसन्द करता है, यह और बात है कि इसका तरीक़ा, मेयार और पैमाना लोगों में अलग-अलग होता है ।

इस्लाम में पवित्रता का महत्व

इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई और पवित्रता की कितनी ज़्यादा अहमियत है, इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस्लाम ने अपनी ज़्यादातर इबादतों की अदाएगी और धार्मिक कामों के लिए सफ़ाई-सुथराई को अनिवार्य कर दिया है, अर्थात पाक-साफ़ हुए बिना ये इबादतें की ही नहीं जा सकतीं । अगर कोई व्यक्ति पाकी और पवित्रता के बिना यह इबादत करता है, तो इस्लाम के अनुसार उसकी वह इबादत खुदा के यहां क़बूल ही नहीं होगी, बल्कि ऐसा आदमी उसका अवज्ञाकारी साबित होगा और गुनहगार भी, जिसकी सज़ा उसे मरने के बाद पारलौकिक जीवन में मिलेगी । सफ़ाई और पवित्रता के संबंध में इस्लाम की यह विशेषता है ।

इस्लांम की एक विशेषता यह भी है कि उसने केवल ऊपरी सफ़ाई-सुथराई पर ही ज़ोर नहीं दिया, बल्कि वास्तविक पवित्रता की अवधारणा भी पेश की । यह कहना ज़्यादा उचित होगा कि इस्लाम ने सफ़ाई-सुथराई को पवित्रता प्रदान की है और हमें वास्तविक पवित्रता और उसकी रूह से अवगत कराया है ।

इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई और पाकी की जो अहमियत है, उसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह की ओर से जब लोगों की रहनुमाई व मार्गदर्शन के मुख्य काम पर लगाया गया, उस समय अल्लाह ने उन्हें जो आदेश दिए उनमें एक आदेश सफ़ाई और पवित्रता का भी था । अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है–

"ऐ ओढ़-लपेटकर लेटने वाले ! (पैग़म्बर मुहम्मद) उठो और ख़बरदार करो और अपने रब की बड़ाई का ऐलान करो और अपने कपड़े स्वच्छ रखो और गन्दगी से दूर रहो । (क़ुरआन, 74:1-5)

स्वच्छता और ईमान

पाकी, सफ़ाई तथा स्वच्छता के बारे में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"ईमान वाला कभी नापाक (अपवित्र) नहीं रहता ।"
(हदीस)

अर्थात आप (सल्ल॰) का फ़रमान है कि अपवित्र और गन्दा रहने वाला व्यक्ति ईमान वाला हो ही नहीं सकता । अगर वह कभी अपवित्र हो जाता है या कोई गन्दगी उसको लग जाती है तो वह इस हालत में देर तक नहीं रहता, बल्कि जल्द से जल्द पाक-साफ़ होने की कोशिश करता है । क्योंकि ईमान वाला तो साफ़-सुथरा और सदैव पवित्र रहता है । इसी प्रकार एक और जगह आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"स्वच्छता और पवित्रता और सफ़ाई-सुथराई आधा ईमान है ।" (हदीस : मुस्लिम, मिशकात)

ईमान को दो भागों में बांटा जा सकता है । आधा ईमान तो यह है कि इन्सान अपनी आत्मा और रूह को गन्दी और अस्वच्छ न होने दे । अपने दिल और दिमाग़ को ग़लत विचारों, अधर्म और शिर्क, गुमराही और अंधकार से बचाए रखे । वह कोई अनैतिक और अश्लील काम न करे । वह उन विचारों, आस्थाओं और धारणाओं (अक़ीदों) को अपनाए, जो सत्य के अनुकूल और बरहक़ हों और अपने विचारों और ख़यालों को शुद्ध रखे । अपने किरदार को अच्छा बनाए ।

बाक़ी आधा ईमान यह है कि इन्सान बाहरी गन्दगियों को दूर करके अपने शरीर, कपड़े और जगह आदि की सफ़ाई पर पूरा ध्यान दे । इन्हीं दोनों प्रकार की सफ़ाई-सुथराई और स्वच्छता व पवित्रता से ईमान पूर्ण होता है । जो लोग अपने आपको इस प्रकार निर्मल और पाक-साफ़ रखते हैं, वे अपने पालनहार ख़ुदा के प्यारे बन जाते हैं ।

इस्लाम में स्वच्छता के कुछ उदाहरण

(1) हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने ग़ुस्लख़ाने में पेशाब करने से मना किया है, क्योंकि यह काम पवित्रता की दृष्टि से ठीक नहीं है । आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"तुममें से कोई व्यक्ति अपने ग़ुस्लख़ाने में पेशाब

"आख़िर उस व्यक्ति से ज़्यादा बहका हुआ इन्सान कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो 'क़ियामत' तक उसे उत्तर नहीं दे सकते, बल्कि इससे भी बेख़बर है कि पुकारने वाले उनको पुकार रहे हैं, और जब सभी इन्सान इकट्ठा किये जाएंगे उस समय वे अपने पुकारने वालों के दुश्मन और उनकी उपासनाओं के इन्कार करने वाले होंगे ।"

(क़ुरआन, 46:5-6)

★★★★★★★

A Well Wisher

KOLKATA

न करे ।''

(हदीस : अहमद, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने-माजा, नसई)

गुस्लख़ाना इसलिए होता है कि आदमी उसमें नहा-धोकर पाक-साफ़ हो और उसके मन में सफ़ाई का एहसास पैदा हो । लेकिन अगर नहाने की जगह पर ही पेशाब किया जाएगा तो यह सफ़ाई की दृष्टि से कभी उचित नहीं हो सकता । ऐसी जगह पर नहाकर भी आदमी के मन में एक प्रकार की नापाकी व अपवित्रता का एहसास बाक़ी रहेगा ।

(2) ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने सार्वजनिक स्थानों पर, नदी के घाट पर, साए (छांव) के स्थानों और आम रास्तों पर पाख़ाना-पेशाब करने (और कूड़ा-करकट डालने) से मना किया है । आप (सल्ल०) फ़रमाते हैं–

''तीन निन्दित चीज़ों से बचो, अर्थात घाटों, आम रास्तों और छायादार जगहों पर पाख़ाना-पेशाब मत करो ।''

(हदीस : अबू दाऊद, इब्ने-माजा, मिशकात)

नदी और तालाबों के घाटों पर लोग नहाते-धोते हैं, आम रास्तों पर चलते-फिरते हैं और छायादार जगहों, जैसे पेड़ आदि के नीचे लोग आराम करते हैं, इसलिए ऐसी जगहों के गन्दा होने से लोगों को परेशानी होती है और लोग गन्दगी करने वाले को बुरा-भला कहते हैं । सार्वजनिक स्थलों और आम रास्तों पर गन्दगी से प्रदूषण और बीमारियां फैलती हैं ।

(3) कुछ गन्दगियां ऐसी हैं जिनसे बचने की आमतौर पर लोग कोशिश नहीं करते । इनमें से एक पेशाब की छीटें भी हैं । पेशाब की छींटों से बचने की कोशिश तो दूर की बात है, बहुत से लोग इसे गन्दगी ही नहीं समझते । पेशाब करके लोग सफ़ाई के लिए पानी आदि का इस्तेमाल नहीं करते और पेशाब की बूंदें कपड़ों पर पड़ती हैं । ऐसे लोगों में समाज के हर वर्ग के लोग शामिल हैं, पढ़े-लिखे सुसभ्य और सुसंस्कृत कहे जाने वाले लोग भी और धार्मिक लोग भी ।

इस्लाम की नज़र में यह एक गन्दगी है और इससे बचना और इसकी सफ़ाई का ख़याल रखना ज़रूरी है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने न सिर्फ़ यह कि इनसे बचने का आदेश दिया है, बल्कि इनसे न बचने पर आख़िरत (परलोक) में सज़ा की चेतावनी भी दी है ।

(4) पाख़ाने (शौच) के बाद पानी से पाकी हासिल करनी चाहिए तथा हाथ मिट्टी या साबुन से धोने चाहिएं, क्योंकि शौच-कर्म के बाद दुर्गंध हाथ में बाक़ी रह सकती है और यदि सिर्फ़ पानी से हाथ धोया गया तो इससे इसकी अधिक संभावना रहती है कि हाथ गन्दगी के असर से पूरी तरह साफ़ न हो पाए । ऐसा न करने से आदमी के अन्दर घृणा और नफ़रत का एहसास भी बना रहता है, साथ ही बीमारी फैलने का डर हर वक़्त मौजूद रहता है । इसलिए पाख़ाने के बाद साबुन या पाक मिट्टी से हाथों को ज़रूर धो लेना चाहिए । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इस बात का बड़ा ख़याल रखते थे, जैसा कि निम्न घटना से पता चलता है–

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के प्रिय साथी हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि, ''जब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पाख़ाने जाते तो मैं दो बर्तनों में पानी पहुंचाता । वे पाकी हासिल करते । फिर हाथ को ज़मीन पर रगड़कर धोते । फिर मैं दूसरा बर्तन लाता तब आप (सल्ल०) वुज़ू करते ।''

(हदीस : अबू दाऊद, मिशकात)

(5) इन्सान के स्वास्थ्य के लिए मुंह और दांतों की सफ़ाई निहायत ज़रूरी है, इस बात से किसे इन्कार हो सकता है । मुंह और दांतों को स्वास्थ्य और तन्दरुस्ती का दरवाज़ा कहा जाता है ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मुंह की सफ़ाई के बारे में इरशाद फ़रमाया–

''दातुन (मिस्वाक) करने से मुंह भी साफ़ होता है और परवरदिगार ख़ुदा भी ख़ुश होता है ।''

(हदीस : बुख़ारी, मिशकात)

''रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि आप (सल्ल०) घर में आने के बाद सबसे पहले मिस्वाक (दातुन) किया करते थे ।''

(हदीस : मुस्लिम, मिशकात)

(6) सोने से पहले मुंह और दांतों को साफ़ करना बहुत ज़रूरी है । अगर सोते वक़्त आदमी के दांत साफ़ नहीं हैं, तो सोने के बाद मुंह में एक ख़ास तरह का तत्व पैदा हो जाता है, जो दांतों के लिए बड़ा ही नुक़सानदेह होता है । अगर वह तत्व आदमी के पेट में चला जाता है तो उससे मेदे को भी बड़ा नुक़सान पहुंचता है । इसलिए सोने से पहले दांतों को मिस्वाक या ब्रश से ज़रूर साफ़ करना चाहिए ।

आप (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी भर इस बात पर अमल किया है और लोगों के लिए एक नमूना छोड़ा है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) दिन में कई-कई बार दातुन किया करते थे । जब सोकर उठते तो दातुन (मिस्वाक) ज़रूर करते और सोने से पहले भी मिस्वाक ज़रूर करते–

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि, "अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) दिन और रात को उस वक़्त तक न सोते जब तक कि मिस्वाक न कर लेते ।"

(हदीस : अहमद, अबू दाऊद, मिशकात)

(7) खाना पकाने में भी और खाना खाने में भी सफ़ाई-सुथराई का पूरा ख़याल रखना ज़रूरी है । खाने से पहले और खाना खाने के बाद हमेशा हाथों को अच्छी तरह धो लेना चाहिए । ऐसा करना सफ़ाई की दृष्टि से तो ज़रूरी है ही, साथ ही सेहत व स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ज़रूरी है ।

हो सकता है कि आदमी के हाथ में कोई गन्दी और हानिकारक चीज़ लगी हो और वह खाने के साथ पेट में चली जाए और फिर उसके इन्फ़ैक्शन से आदमी किसी गंभीर रोग में ग्रस्त हो जाए । खाने से पहले अगर हाथों को अच्छी तरह धो लिया जाए, तो इससे खाना खाने वाले को इत्मीनान रहता है कि खाने में साफ़-सुथरा हाथ डाला गया है ।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"जिस व्यक्ति को यह बात पसन्द हो कि ख़ुदा उसके घर में भलाई और बरकत पैदा करे तो उसे चाहिए कि खाना खाने से पहले और खाना खाने के बाद हाथ धो लिया करे ।" (हदीस : इब्ने-माजा)

(साभार : 'इस्लाम में पाकी व सफ़ाई', नसीम ग़ाज़ी फ़लाही)

फ़ार्म–4

नियम–8

प्रकाशन : 'कान्ति', D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

प्रकाशन अवधि : मासिक

प्रकाशक, मुद्रक : **मुहम्मद अहमद**

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : फ्लैट न॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

सम्पादक : **डॉ॰ मुहम्मद अहमद**

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एफ 101, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव-II, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025

स्वामित्व : **दावत ट्रस्ट (रजि॰)** D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज

चेयरमैन : **मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सेक्रेट्री : **जनाब टी॰ आरिफ़ अली** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सदस्य : 1. **जनाब मुहम्मद जाफ़र,** फ्लैट न॰ 102, दारुस्सलाम, ई-89, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 2. **प्रो॰ के॰ ए॰ सिद्दीक़ हसन,** कदम बोट हाउस, पी॰ओ॰ मेडिकल कॉलेज, कालीकट, केरल-693008, 3. **जनाब नुसरत अली,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 4. **जनाब एजाज़ अहमद असलम,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 5. **जनाब मुहम्मद मुज्तबा फ़ारूक़,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 6. **जनाब रफ़ीक़ अहमद,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 7. **डॉ॰ वक़ार अनवर,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 8. **जनाब परवाज़ रहमानी,** डी-160/2 फर्स्ट फ्लोर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 9. **डॉ॰ सैयद क़ासिम रसूल इलयास,** 632/9, ज़ाकिर नगर, नयी दिल्ली-25, 10. **इंजी॰ मुहम्मद सलीम,** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 11. **जनाब मुहम्मद अहमद,** फ्लैट न॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

मैं मुहम्मद अहमद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।

हस्ताक्षर

प्रकाशक, मुद्रक : **मुहम्मद अहमद**

1 मार्च 2018

इस्लाम धर्म के अध्ययन के वास्तविक स्रोत

■ ज़हीर ललितपुरी

आधुनिक जनमानस में इस्लाम धर्म के प्रति जो ग़लतफ़हमियां हैं उनका एकमात्र कारण इस महत्वपूर्ण धर्म की जानकारी का अभाव है । जिस व्यक्ति को इस धर्म की सच्ची जानकारी प्राप्त हो जाती है वह उसका हृदय से सम्मान करने लगता है । यह भी सच है कि इस्लाम धर्म, इस्लामी जीवन-व्यवस्था और इस्लामी जीवन-दर्शन हमेशा चर्चा का विषय रहे हैं । इस्लाम धर्म आज भी चर्चा का विषय हैं लेक़िन उसके प्रति लोगों में ग़लत धारणाएं पैदा हो गयीं । ताहम किसी धर्म के प्रति बिना समझे-बूझे कोई ग़लत धारणा बना लेना उचित नहीं है । क्योंकि ग़लत धारणाओं से विसंगतियां जन्म लेती हैं । अत: इस धर्म, जीवन व्यवस्था और दर्शन को प्रामाणिक और वास्तविक स्रोतों के माध्यम से समझना अत्यंत आवश्यक है ।

इन दिनों इस्लाम धर्म की जानकारी के जो माध्यम उपलब्ध हैं उनमें से बहुत सारे भ्रामक हैं । कुछ जानकारियां इस्लाम विरोधियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही हैं जो बहुत सारी ग़लतफ़हमियां पैदा करती हैं । कुछ जानकारियां स्वयं नादान मुसलमानों द्वारा प्रस्तुत की जा रही हैं, जिनसे इस्लाम धर्म की ग़लत तस्वीर सामने आ रही है । वास्तविकता यह है कि वर्तमान काल के बहुत क़म मुसलमान इस्लाम की सही जानकारी रखते हैं, इसलिए उनका जीवन वास्तविक इस्लामिक जीवन से मेल नहीं खाता । मुसलमानों में नादानी और कमअक़्ली की वजह से बहुत सारी ख़राबियां पैदा हो गयी हैं जिनको देखकर भी बहुत सारे ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम और मुसलमानों के प्रति ग़लतफ़हमियों का शिकार हो जाते हैं । इसलिए आवश्यक यह है कि इस्लाम धर्म को उचित स्रोत के माध्यम से समझा जाए ।

इस्लामिक जीवन व्यवस्था नैसर्गिक और प्राकृतिक ईश्वरीय व्यवस्था है इसलिए इस्लामी जीवन-दर्शन को समझने का सबसे अच्छा स्रोत स्वयं ईश्वर है । ईश्वर ने मनुष्य जाति को पैदा कर यूं ही गुमराहियों के अंधेरों में भटकता नहीं छोड़ दिया है बल्कि उसकी जानकारी का भरपूर इन्तिज़ाम किया है । इस्लामी जीवन-व्यवस्था अनूठी ईश्वरीय जीवन-व्यवस्था है । अत: जो लोग इसको समझना चाहते हैं उन्हें सही तौर पर इस जीवन-व्यवस्था की जानकारी उन्हीं नैसर्गिक, प्राकृतिक और ईश्वर प्रदत्त स्रोतों से मिलेगी जिन्हें स्वयं ईश्वर ने उपलब्ध कराया है । इस जीवन-व्यवस्था को समझने का सबसे बड़ा माध्यम स्वयं ईश्वर है अत: उसे समझने के बाद ही इस्लामी जीवन-दर्शन को समझा जा सकता है । किंतु यह कहा जा सकता है कि ईश्वर प्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने नहीं है इसलिए उसे कैसे तार्किक और वैज्ञानिक आधार पर कैसे समझा जा सकता है ?

यह सत्य है कि ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने नहीं है, किन्तु इसकी समुचित व्यवस्था सृष्टि में की गयी है जिसके माध्यम से ईश्वर को समझा जा सकता है । यह भी जाना जा सकता है कि ईश्वर और मनुष्य के बीच क्या रिश्ता है । यह भी मालूम किया जा सकता है कि मनुष्य को क्यों पैदा किया गया है, उसे धरती पर क्यों भेजा गया है और उसे धरती पर रहकर क्या करना है । स्वयं ईश्वर ने जब मनुष्य को पैदा किया था तो उसे सृष्टि के समस्त ज्ञान के साथ यह भी सिखाया था कि उसे धरती पर जाकर क्या करना है । वही ज्ञान सच्चा ज्ञान है जिसके प्रकाश में प्रारंभिक युग से अंतिम युग तक मनुष्य को जीवनयापन करना है । उसी ज्ञान में बताया गया है कि सृष्टि का निर्माण क्यों हुआ और उसका विकास और संचालन कैसे हो रहा है । उसमें यह भी बता दिया गया था कि सृष्टि का अंत किस प्रकार होगा और उसके बाद क्या होगा । वस्तुत: मनुष्य जाति को वह सारा ज्ञान उपलब्ध कराया गया है जिसकी उसको आवश्यकता है एवं प्रत्येक मनुष्य को यह क्षमता दी गयी है कि वह परिस्थिति, काल और आवश्यकतानुसार उस ज्ञान को कभी भी प्राप्त कर सकता है ।

वर्तमान काल में इस्लामिक जीवन-व्यवस्था को समझना बेहद आसान है, बल्कि पहले से अधिक आसान है । बहुत सारे ऐसे स्रोत हैं जिनके माध्यम से इस्लामिक जीवन-दर्शन,

इस्लामिक जीवन-व्यवस्था, जीवन गुज़ारने के इस्लामिक मार्गदर्शन, इस्लाम के आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक व विधि और न्याय संबंधी सिद्धांतों, आस्थाओं और अवधारणाओं को समझा जा सकता है । इस्लामिक जीवन-व्यवस्था, सिद्धांत, दर्शन और उसके मूलाधारों, धारणाओं, आस्थाओं और विश्वास को समझने के स्रोत ईश्वर प्रदत्त हैं और आज भी सर्वत्र उपलब्ध हैं । ये विज्ञान की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं और तर्क, बुद्धि और ज्ञान के आधार पर समझे जा सकते हैं । इन स्रोतों के ज़रिये एक सामान्य बुद्धि का आम इन्सान भी इस्लामिक जीवन व्यवस्था और इस्लामिक जीवन-दर्शन को समझ सकता है तथा उच्च स्तर का बुद्धिमान और उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान व्यक्ति भी अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर संतुष्टि प्राप्त कर सकता है ।

इस्लाम धर्म की प्रामाणिक, बौद्धिक और वैज्ञानिक जानकारी का प्रमुख स्रोत ईशवाणी, ईश्वरीय संदेष्टाओं की शिक्षाएं और आसमानी किताबें रही हैं । आधुनिक युग में अंतिम ईश्वरीय ग्रंथ पवित्र क़ुरआन, उस पर आधारित अंतिम ईशसंदेष्टता हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के वक्तव्य, आपका जीवन आदर्श और आपके साथियों और अनुयायियों द्वारा संकलित शिक्षाएं और उनका जीवन आदर्श, इस्लामी सिद्धांत और इस्लामी जीवन-व्यवस्था को समझने के मूलाधार हैं । पवित्र क़ुरआन के पूर्व जो आसमानी किताबें मानवता के मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुईं और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से पूर्व जो ईशदेष्टता धरती पर भेजे गये उनकी प्रामाणिक शिक्षाएं आज हमारे सामने हमारे मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध नहीं हैं । इसलिए अंतिम ईश्वरीय ग्रंथ पवित्र क़ुरआन, उस पर आधारित अंतिम ईशसंदेष्टता हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के वक्तव्य, आपका जीवन-आदर्श और आपके साथियों और अनुयायियों द्वारा संकलित शिक्षाएं और उनका जीवन आदर्श इस्लामी सिद्धांत, जीवन-व्यवस्था और जीवन-दर्शन समझने के एकमात्र स्रोत हैं ।

वस्तुत: इस्लाम धर्म की सही जानकारी के अभाव में विश्व में अनेकों समस्याएं पैदा हो गयीं हैं । वास्तव में मानवता की वर्तमान समस्याओं का सही हल इस्लाम धर्म के सिद्धांतों, आदर्शों और मानव मूल्यों में है किंतु उनको न जानने के कारण मानवता की समस्याओं का वास्तविक समाधान नहीं हो पा रहा है । इसके विपरीत सही जानकारी के अभाव में, इस्लाम के प्रति पूर्वाग्रहों के कारण और मुसलमानों की नादानियों के कारण एक सच्चा ईश्वरीय धर्म भ्रम और घृणा का शिकार हो गया है इसलिए लोग उससे लाभांवित नहीं हो पा रहे हैं । सृष्टि के रचयिता ने इस्लामी जीवन-व्यवस्था के रूप में एक बहुत ही ख़ूबसूरत जीवन-व्यवस्था मानवता की भलाई के लिए प्रदान की है लेकिन दुर्भाग्य से मानवता उसका भरपूर फ़ायदा नहीं उठा पा रही है । इसलिए वक़्त का तक़ाज़ा है कि इस्लाम धर्म को, उसके सही रूप को, वास्तविक शिक्षाओं के माध्यम से समझा जाए और उन शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करके मानवता का उद्धार किया जाए ।

दारुल मुसन्निफ़ीन का हिन्दी प्रकाशन

1.	अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात	–मौलाना सैयद सुलैमान नदवी	200/-
2.	अल-फ़ारूक़	–अल्लामा शिब्ली नोमानी	450/-
3.	रहमत-ए-आलम	–सैयद सुलैमान नदवी	60/-
4.	उत्तम आदर्श	–मौलाना सैयद सुलैमान नदवी	125/-
5.	मुहम्मद शिब्ली नोमानी	–डॉ॰ बाबर अशफ़ाक़ ख़ान	80/-
6.	हज़रत आयशा (रज़ि॰) की जीवनी	–मौलाना सुलैमान नदवी	230/-
7.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-1	–सैयद सबाहुद्दीन	125/-
8.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-2	–सैयद सबाहुद्दीन	180/-
9.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-3	–सैयद सबाहुद्दीन	225/-

पता : दारुल मुसन्निफ़ीन शिब्ली एकेडमी, आज़मगढ़ (यू॰पी॰) 276008

Cont. : Fakharul Islam Sb., Mob. : 9935233940

आदर्श समाज के निर्माण में परलोक की धारणा का योगदान

पुस्तक : मानव-जीवन और परलोक
लेखक : ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी, डॉ॰ मुहम्मद अहमद, डॉ॰ सैयद शाहिद अली
पृष्ठ : 44, मूल्य : 20.00
प्रकाशक : एम॰एम॰आई॰ पब्लिशर्स, नयी दिल्ली-25
फ़ोन/फ़ैक्स : 011-26981652, 26947858

'मानव-जीवन और परलोक' शीर्षक पुस्तक में लेखकों ने लौकिक और पारलौकिक जीवन के बीच पारस्परिक संबंध और उसके महत्व पर प्रकाश डाला है । साथ ही, पारलौकिक जीवन को मानने से सांसारिक जीवन और पारलौकिक जीवन में मिलने वाले अनंत लाभों और न मानने से होने वाली अपूरणीय क्षतियों का यथार्थपरक और मार्मिक चित्रण किया गया है ।

सांसारिक जीवन परीक्षा-स्थल है और पारलौकिक जीवन परिणाम-स्थल । यहां जो जैसा बोएगा, वहां वह वैसा ही काटेगा । अर्थात 'जैसी करनी, वैसी भरनी' वाली कहावत हर मनुष्य पर चरितार्थ होगी । सुकर्मियों को उनके कर्म के बदले स्वर्ग की प्राप्ति होगी और कुकर्मियों को नरक की दहकती आग में डाला जाएगा ।

पारलौकिक जीवन मानव में ईशभय उत्पन्न करता है । मनुष्य के मन में सदा यह भावना बनी रहती है कि ईश्वर हमारे हर कर्म और सोच को देखता रहता है, चाहे वह कर्म या सोच खुला हो गया छिपा, अच्छा हो या बुरा । अत: हम यथासंभव बुरे कर्मों और बुरे विचारों से बचने की कोशिश करते हैं । हम बुरे कर्मों और विचारों से जितना अधिक बचते हैं, उतना ही अधिक स्वर्ग के निकट होते जाते हैं और उतना ही अधिक स्वच्छ और निर्मल मानव-समाज का निर्माण होता जाता है । यदि हमारा व्यवहार इसके विपरीत होता है, तो हम स्वर्ग से दूर और नरक के निकट होते जाते हैं और हम दूषित और भ्रष्ट मानव-समाज के निर्माण का कारण बनते हैं । आज मानव-समाज में जो बुराइयां और भ्रष्टाचार पाए जाते हैं, वे सब ईशभय-विहीनता अथवा परलोक विमुखता ही का अपरिहार्य परिणाम हैं । आज प्राय: हर जगह दानवीय प्रवृत्ति के लोग मानव-मूल्यों को बड़ी क्रूरता के साथ अपने पैरों से कुचल रहे हैं और धन की लोभी वर्चस्ववादी मानव-समाज को युद्ध और आतंक से ग्रस्त करके शायद तीसरे विश्वयुद्ध के महाविनाश के गर्त की ओर ले जा रही हैं । पारलौकिक जीवन के पुरस्कार और दंड को भुलाकर मानव, दानव का विकराल रूप धारण करता जा रहा है ।

प्रस्तुत पुस्तक में मंसूरी साहब के दो लेख–'इस जीवन के बाद क्या' और 'परलोक की तैयारी आज से', डॉ॰ मुहम्मद अहमद साहब का एक लेख–'कर्म, पुनर्जीवन और इस्लाम' और डॉ॰ सैयद शाहिद अली का एक लेख–'मौत के बाद क्या ?' कुल चार लेख हैं । पुस्तक की भूमिका लिखी है मुहम्मद इक़बाल मुल्ला साहब ने ।

मंसूरी साहब पारलौकिक जीवन को नकारने के दुष्परिणामों को इन शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं–

"इस जीवन के पश्चात के जीवन की धारणा को नज़रअंदाज़ करने से अनेक प्रकार के चारित्रिक विकार इन्सान में जन्म लेते हैं । उसका व्यक्तित्व संकुचित और विकृत हो जाता है । वह मूल्य, मर्यादा और नैतिकता की परवाह नहीं करता । अत: वह सामान्यत: नेकी और भलाई के कामों के लिए आमादा नहीं होता । उसका हर काम व्यक्तिगत लाभ-हानि पर केन्द्रित हो जाता है । उसे बुराई, बदकारी और भ्रष्ट तौर-तरीक़े अपनाने में कोई संकोच नहीं होता । इस प्रकार समाज विभिन्न प्रकार की बुराइयों, समस्याओं और विकारों से पट जाता है । वर्तमान समाज की यह दुर्दशा हमारे सामने है ।" (पृ॰ 8)

मंसूरी साहब आगे लिखते हैं, "इसके विपरीत परलोक को मौलिक रूप में मानने से इन्सान का चरित्र निखरता और संवरता है । वह भले और नेक काम करता है, किसी का हक़ नहीं मारता है, और न किसी पर जुल्म-ज़्यादती करता है । वह सबका हित, लाभ और कल्याण चाहता है और जो अपने लिए पसन्द करता है, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करता है । ...वह भले और नेक काम करता है, बुराई, अत्याचार, अनाचार, अन्याय और अश्लीलता से दूर रहता है ।" (पृ॰ 10)

'पुनर्जीवन की इस्लामी धारणा' का परिचय डॉ॰ मुहम्मद अहमद साहब इन शब्दों में देते हैं–

"इस्लाम की यह धारणा है कि मनुष्य का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है । यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है । शाश्वत जीवन तो 'आख़िरत' (परलोक का जीवन) है । मनुष्य का यह जीवन शाश्वत जीवन के लिए तैयारी का अवसर जुटाता है । यदि मनुष्य अपने जीवन को ईश्वरीय आदेशों के अनुरूप बनाता है, एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व, पारलौकिक जीवन आदि मौलिक धारणाओं को स्वीकार करता हैं एवं सत्कर्मों में लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है, तो उसके लिए अच्छा बदला है और वह जन्नत (स्वर्ग) का पात्र होगा । वहां उसे वास्तविक जीवन, सुख-शांति और अमरता प्राप्त होगी । वह इस लोक का अत्यंत विकसित रूप होगा, वहां कोई अल्पता और कमी न होगी । सत्कर्मी इसमें सदैव रहेगा । इसके विपरीत मिथ्याचार में लगे दुष्कर्मी जहन्नम (नरक) की दहकती आग में डाल दिया जाएगा, जिसमें वह सदैव जलेगा । दुराकर्मी विभिन्न यातनाओं से भी दो-चार होगा ।

निष्कर्ष यह कि परलोक की धारणा का मानव-जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । यह न केवल एक स्वस्थ एवं कल्याणकारी मानव-समाज के निर्माण में सहायक है, बल्कि विकार-रहित और सुख-शांति से परिपूर्ण समाज की स्थापना में अनुपम योगदान देता है । यह अवधारणा परलोक-परायणता के नाम पर लोक विमुखता और पलायनवाद का पाठ नहीं पढ़ाती, बल्कि यह तो लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के बीच सामंजस्य की शिक्षा देती है । इसी सामंजस्य से मानव-जीवन लोक और परलोक दोनों में संवर जाता है और इसके अभाव में विनाशकारी बिगाड़ का शिकार हो जाता है ।

● मुहम्मद इलियास हुसैन

"ज़माने की क़सम, इन्सान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की ताकीद करते रहे ।"

(क़ुरआन, 103:1-3)

A Well Wisher

KOLKATA

चिंता भगाइए

■ डॉ॰ प्रदीप प्रह्लाद

जिन दैनन्दिन घटनाओं का इन्सान के जीवन में सबसे ज़्यादा महत्व होता है, उनमें से चिंता भी एक है। यह स्वाभाविक गुण इन्सान के जीवन में बहुत गहरे बैठा होता है और प्रत्येक व्यक्ति को मानो यह विरासत में मिलता है।

चिंता करने की आदत एक बार पड़ जाए तो आसानी से नहीं जाती। यह इन्सान के दिल-दिमाग़ की शांति या सुख-चैन छीन लेती है। चिंता या बेचैनी हर किसी को परेशान करती है और हर आयु वर्ग के लोगों को होती है। इसकी वजह से अनेक मानसिक रोग होते हैं। इससे इन्सान का स्वास्थ्य तो ख़राब होता ही है, समाज को भी धक्का लगता है।

चिंताएं इन्सान को कुछ समय में खोखला करके रख देती है। नोबल पुरस्कार विजेता डॉ॰ अलैक्सिस कारेल कहते हैं, जो लोग चिंताओं का मुक़ाबला करना नहीं जानते वे जवानी में ही मर जाते हैं।

पैप्टिक अल्सर

अब यह तो हर कोई जान गया है कि दिमाग़ी तनाव और परेशानियां हमारे पेट में बनने वाले पाचक रसों और पेट की हलचलों को बहुत नुक़सान पहुंचाते हैं। पैप्टिक अल्सर पैदा करने में इनका बहुत बड़ा हाथ है। इनसे एक और पेट संबंधी बड़ी

मानसिक चिंता की होम्योपैथिक चिकित्सा

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली लक्षणों पर आधारित चिकित्सा प्रणाली है। इसमें मानसिक बीमारियों का भी प्रभावी इलाज है। इस क्षेत्र में इधर के वर्षों में इतना काम हुआ कि अब होम्योपैथिक दवाओं के द्वारा चरित्र-निर्माण के दावे तक किये जाने लगे हैं। घर-परिवार का वातावरण अच्छा और सामंजस्यपूर्ण बनाने के साथ ही अपराधियों और कुकृत्यों में लिप्त लोगों को भी असामाजिक गतिविधियों से छुटकारा दिलाने में होम्योपैथिक दवाएं अपना प्रभाव दिखा चुकी हैं। वैसे तो यह एक सर्वमान्य सार्वभौमिक सच्चाई है कि निरोगिता की शक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर के पास है, वह जिसे चाहता है निरोग करता है। दवाएं तो एक माध्यम बनती हैं।

यहां हम विषयान्तर न होते हुए मानसिक विकारों में केवल मानसिक चिंता की होम्योपैथिक चिकित्सा की चर्चा करेंगे। पाठक लक्षणों के आधार पर अपनी दवाएं चुन सकते हैं। दवाएं और उनके लक्षण इस प्रकार हैं–

	दवाएं	लक्षण
(1)	A conite Nap	अत्यंत चिंता, बेचैनी, निरोग होने की आशा समाप्त।
(2)	Ambra Grisea	बुढ़ापे की अवस्था में।
(3)	Caladium sep.	नपुंसकता के कारणचिंता।
(4)	Canabis Sativa	रोज़ दोपहर बाद चिंता।
(5)	Coca	काम की अधिकता के कारण चिंता और अवसाद।
(6)	Gelsimium	बुख़ार के बाद।
(7)	Helleborus Niger	मियादी बुख़ार के बाद।
(8)	Kali phos	हर प्रकार के मानसिक अवसाद में उपयोगी।
(9)	Phosphorus	बहुत उत्तेजना, मानसिक परिश्रम के कारण मुखमंडल का स्नायूशूल, दर्द के साथ सिर में चक्कर।
(10)	Phosphoric Acid	दिमाग़ से ज़रूरत से अधिक काम लेने पर।
(11)	Pulsatilla	चिड़चिड़ापन, तली-भुनी चीज़ें खाने से उत्पन्न रोग।
(12)	Zincum Phos	मानसिक कमज़ोरी में।

ये सभी दवाएं 30C पोटेंसी में दिन में तीन बार लेनी चाहिए। केवल Kali Phos का 6X और 12X में भी इस्तेमाल हो सकता है। किसी गंभीर केस में किसी अच्छे होम्योपैथिक डॉक्टर से संपर्क करें। ● डॉ॰ मुहम्मद अहमद

बीमारी होती है । –इरिटेबल बाऊल सिंड्रोम

इसलिए आजकल के अनेक डॉक्टर इस तरह के रोगियों को खाने-पीने की दवाइयां देने से ज़्यादा उनको तनाव दूर करने वाले उपाय अपनाने की सलाह ज़्यादा देते हैं । नर्वस स्टोमेक ट्रबल्स नामक पुस्तक के लेखक डॉ॰ जोसेफ मोंटेग के अनुसार आपको अल्सर इससे नहीं होता कि आप क्या खा रहे हैं, बल्कि आपको क्या खाए जा रहा है, इस बात से होती है ।

ब्लड शुगर बढ़ता है

चिंता करने से सिर्फ़ अल्सर ही नहीं होता, ऐसे अनेक रोग होते हैं जिनके रोगी राहत के लिए दुनिया भर के अस्पतालों और दवाख़ानों के चक्कर काटते हैं । चिंता कैसी भी हो, वह अनुकूल रेशों (सिम्पेथैटिक फाइबर्स) को उत्तेजित करती है और एड्रेनेलिन नामक हार्मोन निकलता है । इस हार्मोन से खून और मूत्र में शक्कर की मात्रा बढ़ती है । यही कारण है कि डायबिटीज के पुराने रोगियों में ब्लड शुगर, खान-पान पर नियंत्रण के बाद भी अक्सर बढ़ता रहता है ।

बहुत अधिक चिंता करने वाले या तनाव में रहने वाला व्यापारी बहुत सरलता से डायबिटीज का रोगी बन सकता है और यहां बहुत संभव है कि जब तक स्टाक बाज़ार में मंदी आती है तो व्यापारी का ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है ।

हाइपर टेंशन तथा दिल का रोग

भावनाओं या दिमाग़ी तनाव में जो सबसे ज़्यादा पाए जाने वाले शारीरिक रोग उभरते हैं, उनमें से कुछ हैं, नींद न आना, ऐंगजाइटी रिएक्शन, थाइरोटोक्सिकोसिस, उच्च रक्त चाप और एंजाइना पेक्टोरिस ।

सौंदर्य नाशक

चिंता शरीर को भीतर से ही खोखला नहीं करती, बल्कि उसकी यह विनाशलीला शरीर के बाहरी आवरण पर भी साफ़ दिखायी देती है । सुन्दरता को जितना नुक़सान चिंताओं या दिमाग़ी तनाव से होता है उतना शायद किसी और बात से नहीं होता । चिंताओं या दिमाग़ी तनाव में झुर्रियां पड़ जाती है । बाल सफ़ेद होते हैं । चेहरे की रंगत बिगड़ती है और आदमी समय से पहले बूढ़ा हो जाता है ।

सफलता का मूल्य

अब यह कोई रोग नहीं रह गया है कि जैसे-जैसे इन्सान का जीवन स्तर बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे चिंताओं का स्तर और मात्रा बढ़ती जा रही है और इनकी वजह से होने वाले मानसिक रोगों की संख्या भी । आधुनिक जीवन पद्धति का यह साइड इफैक्ट रफ़्तार से फैलता ही जा रहा है । मानसिक दबाव गांवों के मुक़ाबले बड़े-बड़े शहरों में ज़्यादा पाये जाते हैं ।

विश्व में सबसे ज़्यादा सफल व्यक्तियों में से अधिकतर पैप्टिक अल्सर, दिल के रोग, ब्रांकियल अस्थमा, हाई ब्लड प्रेशर और दूसरे मनोदैहिक (साइकोसोमेटिक) रोगों के शिकार हैं और इस रूप में अपनी सफलता का बड़ी भारी मूल्य चुका रहे हैं ।

मानसिक तनाव से छुटकारा पाने का अस्थायी (टैम्पोरेरी) उपाय ट्रांक्वीलाइजरों का इस्तेमाल करना है । वे ट्रांक्वीलाइजर बाज़ार में अनेक ब्रांड नामों से मिलते हैं । पश्चिमी देशों में रहने वाले अनेक लोग प्रतिदिन ली जाने वाली दवाइयों के रूप में इनका रोज़ इस्तेमाल करते हैं । इसके नुक़सान अधिक हैं ।

इसके अलावा काम और खानपान संबंधी आदतें नियमित होना चाहिए । आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ पर्याप्त व्यायाम भी करना चाहिए । इनके लिए सैर करना, दौड़ना, तैरना भी लाभकारी है । लगातार चिंता करने वाले लोग अक्सर ज़्यादा धूम्रपान करते हैं । इसलिए धूम्रपान कम से कम किया जाए ।

ट्रांक्वीलाइजर्स का उपयोग चिंताओं पर शुरू में क़ाबू पाने के लिए किया जाए । रोगी को मनोचिकित्सका देना और हिम्मत बंधाना, दवाओं से ज़्यादा ज़रूरी है । जितना जल्दी लोगों को एहसास होगा कि उनकी मुक्ति उनके हाथ में है, उतना ही हर किसी के लिए बेहतर होगा ।



भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियां-1

ईसा पूर्व

3000-1500–सिंधु घाटी सभ्यता

576–गौतम बुद्ध का जन्म

527–महावीर का जन्म

327-326–भारत पर एलेक्जेंडर का हमला । इसने भारत और यूरोप के बीच एक भू-मार्ग खोल दिया ।

313–जैन परंपरा के अनुसार चंद्रगुप्त का राज्याभिषेक।

305–चंद्रगुप्त मौर्य के हाथों सेल्यूकस की पराजय ।

273-232–अशोक़ का शासन ।

261–कलिंग की विजय ।

145-101–एलारा का क्षेत्र, श्रीलंका के चोल राजा ।

58–विक्रम संवत् का आरंभ ।

ईसवी

78–शक संवत् का आरंभ ।

120–कनिष्क का राज्याभिषेक ।

320–गुप्त युग का आरंभ, हिंदू भारत का स्वर्णिमकाल।

380–विक्रमादित्या का राज्याभिषेक

405-411–चीनी यात्री फाहयान की यात्रा ।

415–कुमार गुप्त-1 का राज्याभिषेक।

455-स्कंदगुप्त का राज्याभिषेक।

606-647–हर्षवर्धन का शासन।

712–सिंध पर पहला अरब आक्रमण ।

836–कन्नौज के भोज राजा का राज्याभिषेक ।

985–चोल शासक राजाराज का राज्याभिषेक ।

998–सुल्तान महमूद का राज्याभिषेक।

1000–1499

1001–महमूद ग़ज़नी द्वारा भारत पर पहला आक्रमण, जिसने पंजाब के शासक जयपाल को हराया था ।

1025–महमूद ग़ज़नी द्वारा सोमनाथ मंदिर का विध्वंस ।

1191–तराई का पहला युद्ध ।

1192–तराई का दूसरा युद्ध ।

1206–दिल्ली की गद्दी पर कुतुबुद्दीन ऐबक का राज्याभिषेक।

1210–कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु ।

1221–भारत पर चंगेज़ ख़ान का हमला (मंगोल का आक्रमण) ।

1236–दिल्ली की गद्दी पर रज़िया सुल्तान का राज्याभिषेक।

1240–रज़िया सुल्तान की मृत्यु ।

1296–अलाउद्दीन ख़िलजी का हमला ।

1316–अलाउद्दीन ख़िलजी की मृत्यु ।

1325–मुहम्मद तुग़लक़ का राज्याभिषेक ।

1327–तुग़लक़ों द्वारा दिल्ली से दौलताबाद और फिर दक्कन को राजधानी बनाया जाना ।

1336–दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना ।

1351–फ़िरोज़शाह का राज्याभिषेक ।

1398–तैमूरलंग द्वारा भारत पर हमला ।

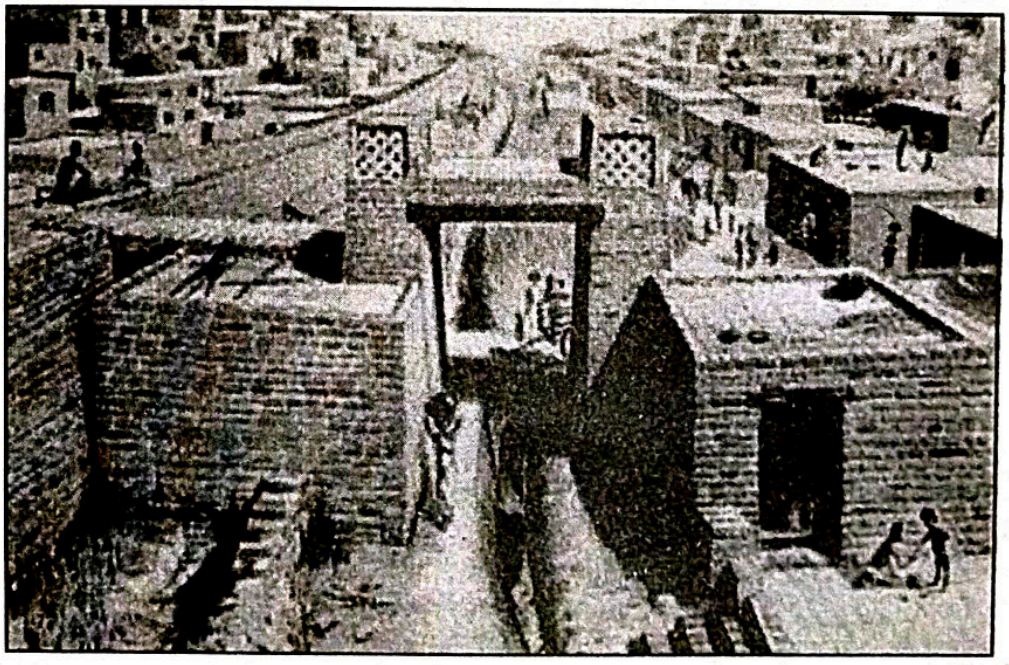

1469–गुरुनानक का जन्म ।

1494–फराना में बाबर का राज्याभिषेक ।

1497-98–वास्को-डि-गामा की भारत की पहली यात्रा (केप ऑफ़ गुड होप के ज़रिए भारत तक समुद्री रास्ते की खोज)।

1500–1799

1526–पानीपत की पहली लड़ाई, बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया-बाबर द्वारा मुग़ल शासन की स्थापना 1527 खानवा की लड़ाई, बाबर ने राणा सांगा को हराया ।

1530–बाबर की मृत्यु और हुमायूं का राज्याभिषेक ।

1539–शेरशाह सूरी ने हुमायूं को हराया और भारत का सम्राट बन गया ।

1540–कन्नौज की लड़ाई ।

1555–हुमायूं ने दिल्ली की गद्दी को फिर से हथिया लिया ।

1556–पानीपत की दूसरी लड़ाई ।

1565–तालीकोट की लड़ाई ।

1576–हल्दीघाटी की लड़ाई-राणा प्रताप ने अकबर को हराया ।

1582–अकबर द्वारा दीन-ए-इलाही की स्थापना ।

1597–राणा प्रताप की मृत्यु ।

1600–ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना ।

1605–अकबर की मृत्यु और जहांगीर का राज्याभिषेक ।

1606–गुरु अर्जुन देव का वध ।

1611–नूरजहां से जहांगीर का विवाह ।

1616–सर थॉमस रो ने जहांगीर से मुलाक़ात की ।

1627–शिवाजी का जन्म और जहांगीर की मृत्यु ।

1628–शाहजहां भारत के सम्राट बने ।

1631–मुमताज महल की मृत्यु ।

1634–भारत के बंगाल में अंग्रेज़ों को व्यापार करने की अनुमति दे दी गयी ।

1659–औरंगज़ेब का राज्याभिषेक, शाहजहां को क़ैद कर लिया गया ।

1665–औरंगज़ेब द्वारा शिवाजी को क़ैद कर लिया गया ।

1666–शिवाजी की मृत्यु ।

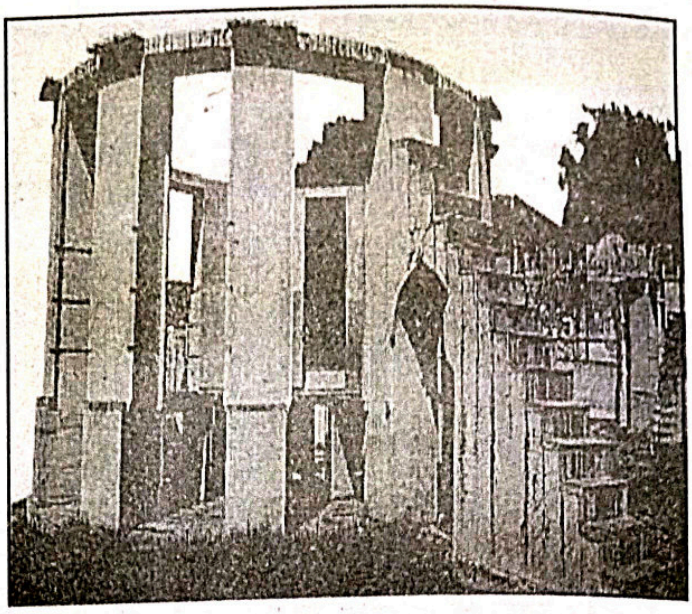

1707–औरंगज़ेब की मृत्यु ।

1708–गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु ।

1739–नादिरशाह का भारत पर हमला ।

1757–प्लासी की लड़ाई, लॉर्ड क्लाइव के हाथों भारत में अंग्रेज़ों के राजनीतिक शासन की स्थापना । 1761 पानीपत की तीसरी लड़ाई, शाहआलम द्वितीय भारत के सम्राट बने।

1764–बक्सर की लड़ाई ।

1765–क्लाइव को भारत में कंपनी का गवर्नर नियुक्त किया गया ।

1767-69–पहला मैसूर युद्ध ।

1770–बंगाल का महान अकाल ।

1780–महाराजा रणजीत सिंह का जन्म ।

1780-84–दूसरा मैसूर युद्ध ।

1784–पिट्स अधिनियम ।

1793–बंगाल में स्थायी बंदोबस्त ।

1799–चौथा मैसूर युद्ध-टीपू सुल्तान की मृत्यु । (जारी)

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



With Best Compliments from :

MAKING THE [EXTRA] ORDINARY

LIS (INDIA) CONSTRUCTION CO. PVT. LTD.

BUILDERS & DEVELOPERS

Regd. office: A/2, Swati Apartment, Juhu Lane, Andheri (W), Mumbai - 400 058
Ph.: 2625 5702-34 Fax: 262 88474 Email: lis.co.in.@gmail.com

Posted on 20-21 February 2018
March 2018
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.02.2018
Total pages 52 with Cover

हिन्दी साहित्य की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

HINDUSTAN
Pavers & Blocks
Group
Established Since 1977

Anwar Khan
+91 9822427700
Akbar Khan
+91 9822497700

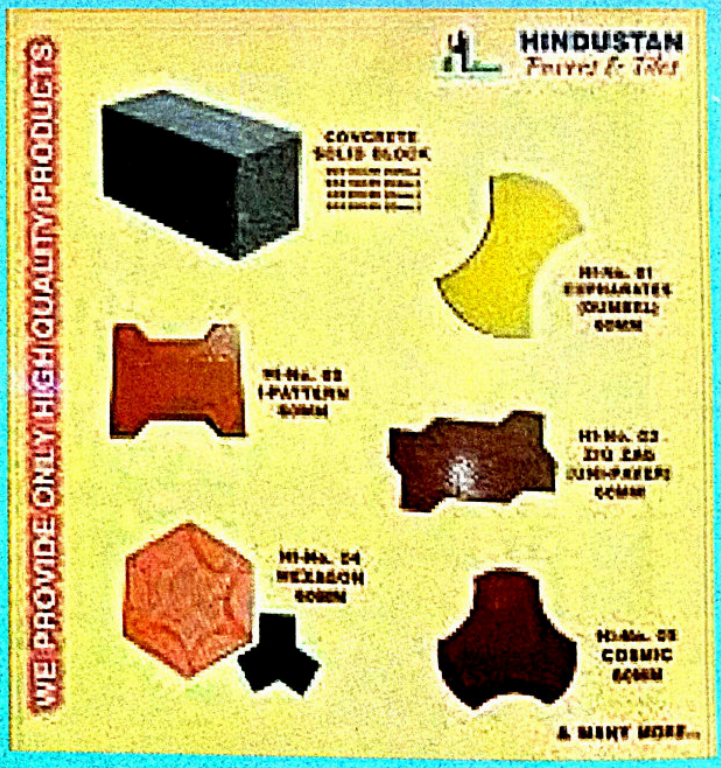

HINDUSTAN INDUSTRIES
Your Lifestyle Paving Company

Manufacturers Of Solid Concrete Blocks,
Interlocking Pavers, Tiles &
Allied Concrete Products

Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com

www.hindustangroupgoa.com